राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उत्तरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत–गुजरात,संस्करण शनिवार 23 सितम्बर 2023 वर्ष–6,अंक–243 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त

बप्पा के दरबार में पूजा हेगड़े की हाजिरी

एक्ट्रेस पूजा हेगड़े आज यानी शुक्रवार को मुंबई में बप्पा के दर्शन के लिए निकलीं। वे वडाला और लालबाग पहुंची थीं। उन्होंने दोनों जगहों पर पूरे विधि विधान से बप्पा का दर्शन किया। इस दौरान उन्होंने मीडिया से बातचीत भी की। पूजा ने कहा कि उन्हें बप्पा के दरबार में आना पसंद है। वडाला में मीडिया से बात करते हुए पूजा ने कहा, 'मैं यहां हर साल आती हूं। मैं यहां जो भी मन्नत मांगती हूं, वो पूरी हो जाती है। मैं प्रार्थना करने हर गणपति के पांडाल में जाती हूं।' पूजा जब दर्शन करने आईं तो उनके आस-पास लोगों की भारी भीड़ दिखी। पुलिस कर्मियों ने उन्हें सही सलामत गणेश प्रतिमा तक पहुंचाया। इसके अलावा फिल्म इंडस्ट्री के सितारों को हाल ही में टी-सीरीज ऑफिस में देखा गया। ये सारे सेलेब्स यहां गणपति बप्पा के दर्शन करने आए हुए थे। किसी के हाथ में मिठाई का डब्बा था तो किसी ने बप्पा के सामने हाथ जोड़कर पूजा की और आशीर्वाद लिया। साजिद खान, शिल्पा शेट्टी, आयुष्मान खुराना के साथ अन्य सितारें भी नजर आए। शिल्पा शेट्टी येलो कलर की फुल-स्लीव कॉलर ड्रेस में बेहद खूबसूरत लग रहीं थी।

महिला आरक्षण विधेयक के संसद से पारित होने के बाद भाजपा मुख्यालय में पीएम का अभिनंदन

मोदी बोलेः जब पूर्ण बहुमत वाली स्थिर सरकार होती है, तो देश बड़े पड़ाव पार करता है

नई दिल्ली। ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक के संसद से पारित होने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को भाजपा मुख्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने पार्टी की महिला कार्यकताओं का अभिवादन किया। उन्होंने महिला कार्यकताओं के पैर भी छुए। इसके बाद महिला मोर्चा की कार्यकताओं ने पीएम मोदी का अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में भाजपा की सभी महिला सांसद, दिल्ली की सभी महिला पार्षद व अन्य महिला जन प्रतिनिधियों की मौजूदगी रही। इस दौरान पीएम मोदी ने कार्यकताओं को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि मैं आज देश की हर माता को, बहन को, बेटी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। कल और परसो हम सबने एक नया इतिहास बनते देखा है। हम सबका सौभाग्य है कि ये इतिहास बनाने का अवसर कोटि-कोटि जनों ने हमें दिया है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम का दोनों सदनों से पास होना, इस बात का भी साक्षी है कि जब पूर्ण बहुमत वाली स्थिर सरकार होती है, तो देश कैसे बड़े फैसले लेता है, बड़े पड़ावों को पार करता है। उन्होंने कहा कि आने वाली अनेकों पीढ़ियों तक इस निर्णय और इस दिवस की चर्चा होगी। मैं पूरे देश को 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' संसद के दोनों सदनों में भारी बहुमत से पारित होने की बहुत बहुत बधाई देता हूं। कभी-कभी किसी निर्णय में देश के भाग्य को बदलने की क्षमता होती है। आज हम सभी ऐसे ही एक निर्णय के साक्षी बने हैं। संसद के दोनों सदनों द्वारा 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' रिकॉर्ड मतों से पारित किया जा चुका है। जिस बात का देश को पिछले कई दशकों से इंतजार था, वो सपना अब सच हुआ है। पीएम मोदी ने कहा कि जब पूर्ण बहुमत की सरकार होती है, तो ऐसे ही मतबूत निर्णय लिए जाते हैं। उन्होंने महिला मतदाताओं को इसका श्रेय देते हुए कहा कि हमारी माताओं-बहनों ने भाजपा को पूरा समर्थन दिया। बढ़चढ़कर मतदान में हिस्सा लिया और भाजपा को मजबूती के साथ सत्ता में आने का मौका दिया। उन्होंने कहा कि आज हर नारी का आत्मविश्वास आसमान छू रहा है। पूरे देश की माताएं, बहनें और बेटियां आज खुशी मना रही हैं, हम सबको आशीर्वाद दे रही हैं। कोटि-कोटि माताओं, बहनों के सपने को पूरा करने का सौभाग्य हमारी भाजपा सरकार को मिला है। इसलिए राष्ट्र को सर्वप्रथम मानने वाली पार्टी के रूप में, भाजपा कार्यकर्ता के रूप में, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में ये हमारे लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम कोई सामान्य कानून नहीं है। ये नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है। ये अमृतकाल में सबका प्रयास से विकसित भारत के निर्माण की तरफ बढ़ा कदम है। पीएम मोदी ने कहा, 'लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी के लिए, इस कानून के लिए भाजपा तीन दशक से प्रयास कर रही थी। ये हमारा कमिटमेंट था। इसे हमने पूरा करके दिखाया है।' उन्होंने कहा कि भारत को विकसित बनाने के लिए, आज भारत नारी शक्ति को खुला आसमान दे रहा है। आज देश, माताओं-बहनों-बेटियों के सामने आने वाली हर अड़चन को दूर कर रहा है।

तमिलनाडु सरकार में मंत्री उदयनिधि स्टालिन को नोटिस

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 'सनातन धर्म' पर टिप्पणी के मामले में तमिलनाडु सरकार में मंत्री और डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन को नोटिस जारी किया है। याचिका में उदयनिधि स्टालिन के सनातन धर्म को समाप्त करने संबंधी बयान के लिए उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने सांसद ए. राजा, सांसद थिरुमावलवन, सांसद सु वेंकटेशन, तमिलनाडु के डीजीपी, ग्रेटर चेन्नई पुलिस कमिश्नर, केंद्रीय गृह मंत्रालय, हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग के मंत्री पीके शेखर बाबू, तमिलनाडु राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष पीटर अल्फोंस और अन्य को भी नोटिस जारी किया है। बता दें कि सनातन धर्म पर टिप्पणी के विवाद को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक और याचिका दायर की गई है। इसमें तमिलनाडु और केरल के पुलिस महानिदेशकों के खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्यवाही शुरू करने की मांग की गई है। तमिलनाडु सरकार में मंत्री उदयनिधि स्टालिन ने पिछले दिनों बेहद आपत्तिजनक बयान दिया था। दरअसल, तमिलनाडु में 'संतानम उन्मूलन सम्मेलन' आयोजित किया गया था, जिसमें कई बड़े नेता शामिल हुए थे। इस सम्मेलन से जुड़ी एक क्लिप भी सोशल मीडिया पर वायरल हुई, जिसमें उनको यह कहते हुए सुना जा सकता है कि कुछ चीजें हैं जिनका हमें उन्मूलन (समाप्त) करना है और हम केवल विरोध नहीं कर सकते। मच्छर, डेंगू, बुखार, मलेरिया, कोरोना, ये सभी चीजें हैं जिनका हम विरोध नहीं कर सकते, हमें इन्हें मिटाना है और सनातन धर्म भी ऐसा ही है।

ट्रेन में महिला सिपाही से बर्बरता करने वाला ढेर

40 किमी. पीछा करके एसटीएफ ने किया अनीश का एनकाउंटर

अयोध्या । चलती ट्रेन में महिला सिपाही से बर्बरता करने वाले आरोपी अनीश को STF ने एनकाउंटर में ढेर कर दिया। मुठभेड़ में दो आरोपी पकड़े गए हैं। जबकि क्रास फायरिंग में एक दरोगा और दो सिपाही जख्मी हुए हैं। ये एनकाउंटर अयोध्या के पूराकलंदर के छतरिवा पारा कैल रोड पर हुआ। शुक्रवार तड़के STF को आरोपियों के बारे में इनपुट मिला कि वो इनायतनगर में छिपे हैं। STF और अयोध्या पुलिस ने ज्वाइंट ऑपरेशन शुरू किया। इलाके की घेराबंदी करके सर्च शुरू किया। खुद को घिरता हुआ देख तीनों बदमाश अनीश, विशम्भर और आजाद ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में विशम्भर और आजाद घायल हो गए। दोनों के पैर में गोली लगी। इसी दौरान अंधेरे का फायदा उठाकर अनीश वहां से बाइक से भाग निकला। STF ने 40 किमी. दूर पूराकलंदर तक उसका पीछा किया। सड़क को पहले ही पुलिस ने सील कर दिया था। यहां पुलिस ने उसे घेरकर सरेंडर करने के लिए कहा। मगर, अनीश ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी फायरिंग में पुलिस की गोली अनीश को लगी। घायल अनीश को पुलिस जिला अस्पताल अयोध्या लेकर पहुंची। वहां डॉक्टरों ने उनको मृत घोषित कर दिया। एनकाउंटर में थानाध्यक्ष पूराकलंदर रतन शर्मा भी घायल हुए हैं। उनके हाथ में गोली लगी है। 2 अन्य सिपाहियों के भी जख्मी हैं। उनको भी अस्पताल में एडमिट किया गया है। अयोध्या एसएसपी राजकरन अयर ने बताया कि अनीश (30) पुत्र रियाज खान महिला कॉस्टेबल पर हमले का मुख्य आरोपी था। यह हैदरगंज के दशलावन का रहने वाला था। वहीं, आजाद भी इसी गांव का रहने वाला है। इसके अलावा, तीसरा आरोपी विशंभर दयाल सुल्तानपुर का रहने वाला है। 31 अगस्त को महिला कांस्टेबल सरयू एक्सप्रेस ट्रेन में खून से लथपथ मिली थी। उनकी ड्यूटी अयोध्या के सावन मेले में लगी थी।

भारत का चीन को मुंहतोड़ जवाब

खेल मंत्री का दौरा रद्द, अरुणाचल के खिलाड़ियों को वीजा नहीं देने का मामला गरमाया

नई दिल्ली। हांगझोऊ एशियाई खेलों से पहले भारत और चीन के बीच विवाद बढ़ गया है। दरअसल, खेलों से पहले चीन की एक नापाक हरकत सामने आई। उसने हांगझोऊ एशियाई खेलों के लिए अरुणाचल प्रदेश के तीन वूशु खिलाड़ियों को अंतिम क्षणों में वीजा नहीं दिया। ये वही तीन खिलाड़ी हैं, जिनके साथ चीन में कुछ महीने पहले हुए यूनिवर्सिटी गेम्स में भी चीन सरकार द्वारा बदसलूकी की गई थी और उन्हें नत्थी वीजा दिया गया था। अब फिर से इन तीनों को चीन ने सामान्य वीजा जारी नहीं किया। ऐसे में ये तीनों भारत की वूशु टीम के साथ हांगझोऊ रवाना नहीं हो सके। अब यह मामला गरमा गया है। भारत ने चीन को मुंहतोड़ जवाब दिया है। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा है कि भारत के खेल मंत्री अनुराग ठाकुर पहले एशियाई खेलों के लिए चीन का दौरा करने वाले थे, जिसे अब रद्द कर दिया गया है। एशियाई खेलों का आधिकारिक आगाज 23 सितंबर को होगा। खेल मंत्रालय और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) बुधवार को इन खिलाड़ियों के वीजा के प्रयास में लगे रहे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। एक खिलाड़ी को एयरपोर्ट से ही वापस लौटना पड़ा। सूत्र बताते हैं कि खेल मंत्रालय, आईओए ने इन तीनों खिलाड़ियों को वीजा जारी करने के लिए आयोजन समिति से बात की तो उनसे कहा गया कि इन खिलाड़ियों को नत्थी वीजा जारी होगी। इसके लिए खेल मंत्रालय तैयार नहीं था। ऐसे में तीनों अरुणाचल प्रदेश के खिलाड़ी तेगा ओनिलु, लामगु मेपुंग और वांगसू न्येमान टीम के साथ नहीं जा पाए। बाकी टीम, जिसमें 10 खिलाड़ी और थे, हांगझोऊ के लिए रवाना हो गई। इससे पहले भी 26 जुलाई को विश्व यूनिवर्सिटी खेलों के लिए इन्हीं तीनों खिलाड़ियों को चीन ने नत्थी वीजा जारी कर दिया था। इसके विरोध में भारत सरकार ने पूरी वूशु टीम को एयरपोर्ट से वापस बुला लिया था। वांग्सू न्येमान को तो इंदिरा गांधी एयरपोर्ट से वापस लौटना पड़ा। उनके पास एशियाई खेलों की आयोजन समिति से जारी एक्रिडिटेशन (मान्यता कार्ड) भी था। खिलाड़ियों को एक्रिडिटेशन पर ही वीजा जारी किया गया है। वांगसू को एयरपोर्ट पर एयरलाइंस ने बताया कि वह केवल हांगकांग तक जा सकती हैं। उससे आगे का उनका वीजा नहीं है। तेगा और मेपुंग के अलावा सूरज को एशियाई खेलों की आयोजन समिति ने ई एक्रिडिटेशन जारी किया था। जब इन खिलाड़ियों ने अपना एक्रिडिटेशन कंप्यूटर से निकालना चाहा तो वांगसू, तेगा और मेपुंग के कार्ड नहीं आए, जबकि सूरज को वीजा जारी कर दिया गया।

आतंकियों का मददगार डीएसपी गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने आतंकियों की मदद करने के आरोप में गुरुवार को सस्पेंडेड ऊढ आदिल मुश्ताक को गिरफ्तार किया है। शेख आदिल पर आतंकवादी गतिविधि में शामिल एक आरोपी मुजामिल जहूर से 5 लाख रिश्वत लेने और एक अन्य पुलिस अधिकारी को फंसाने का आरोप है। DSP आदिल मुजामिल जहूर से लगातार संपर्क में था। वह उसे टेरर फंडिंग केस में लगातार बचाने की कोशिश में लगा हुआ था। पुलिस को आदिल और मुजामिल के बीच टेलीग्राम ऐप पर चैट और करीब 40 बार फोन पर बातचीत के रिकॉर्ड भी मिले हैं। श्रीनगर के नौगाम पुलिस स्टेशन में शेख आदिल के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम और भारतीय दंड संहिता के विभिन्न प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। इनमें झूठे सबूत देना और सबूत नष्ट करना भी शामिल है। दरअसल, टेरर फंडिंग केस में इसी साल फरवरी महीने में पुलिस ने लश्कर-ए-तैयबा के तीन आतंकियों को गिरफ्तार किया था। उनके पास से 31 लाख रुपए जब्त किए गए थे। तीनों ने पूछताछ के दौरान मुजामिल जहूर के नाम का खुलासा किया था। जांच के दौरान डीएसपी आदिल और मुजामिल जहूर के बीच संपर्क का खुलासा हुआ। मार्च में डीएसपी आदिल को सस्पेंड कर दिया गया। वहीं पुलिस मुजामिल की तलाश कर रही थी। इस बीच उसने जुलाई में मामले की जांच कर रहे पुलिस अधिकारी के खिलाफ केस दर्ज करा दिया।

महिला आरक्षण बिल जल्द लागू करे सरकारः राहुल

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने महिला आरक्षण बिल लागू किए जाने को लेकर केंद्र सरकार की मंशा पर सवाल उठाए हैं। राहुल ने शुक्रवार को कांग्रेस कार्यालय में मीडिया से बातचीत में कहा- केंद्र सरकार महिला आरक्षण बिल अभी से क्यों नहीं लागू करती। इसमें जनगणना और परिसीमन जैसे नियम क्यों जोडे. गए। राहुल ने कहा- महिला आरक्षण अच्छा कदम है, लेकिन इसमें दो शर्तें लगाई गई हैं। इसे लागू करने से पहले जनगणना और परिसीमन कराना होगा। इन्हें करने में बहुत साल लगेंगे। महिला आरक्षण को आज से ही लागू किया जा सकता है। भाजपा को इन दोनों शर्तों को हटाकर आरक्षण को तुरंत लागू करना चाहिए। राहुल ने कहा- ये कोई जटिल मामला नहीं है, लेकिन सरकार यह नहीं करना चाहती। ये आज से 10 साल बाद लागू होगा। यह भी नहीं मालूम कि होगा या नहीं होगा। पीएम मोदी रोज OBC के बारे में बात करते हैं लेकिन डइउ को महिला आरक्षण में शामिल क्यों नहीं किया? कांग्रेस सत्ता में आने के बाद जातिगत जनगणना कराएगी। तब पता चलेगा कि देश में कितने डइउ, दलित और आदिवासी हैं। भाजपा नेता उमा भारती ने बताया है कि डइउ के सीनियर नेता 23 सितंबर को मीटिंग करेंगे। इसमें वे चर्चा करेंगे कि महिला आरक्षण में ओबीसी कोटा कैसे मिल सकता है।

चंद्रयान-3 के फिर जागने की उम्मीद

नई दिल्ली। चंद्रयान-3 के लैंडर और रोवर के एक बार फिर जागने की उम्मीद है। 14 दिनों की रात के बाद चांद के साउथ पोल पर एक बार फिर सूरज की रोशनी पहुंचने लगी है। इसरो स्लीप मोड पर डाले गए विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर से आज यानी 22 सितंबर को संपर्क करने की कोशिश करेगा। इसरो के मुताबिक, लैंडर और रोवर के सोलर पैनल पर सूरज की रोशनी पड़ते ही ये काम करना शुरू कर सकते हैं। इसरो ने 4 सितंबर को लैंडर को स्लीप मोड में डाला था। इससे पहले 2 सितंबर को रोवर को स्लीप मोड में डाला गया था। इसरो ने लैंडर-रोवर के रिसीवर ऑन रखे हैं। इसरो ने लैंडर और रोवर को स्लीप मोड में डालने से पहले बैटरी को फुल चार्ज रखा था। रोवर को ऐसी दिशा में रखा गया था कि सूर्योदय होने पर सूर्य का प्रकाश सीधे सौर पैनलों पर पड़े। उम्मीद की जा रही है कि 22 सितंबर को ये फिर से काम करना शुरू करेगा। चंद्रयान-3 को 14 जुलाई 2023 को दोपहर 2 बजकर 35 मिनट पर लॉन्च किया गया था। आंध्र प्रदेश में श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से LVM3 रॉकेट के जरिए इसे स्पेस में भेजा था। 23 अगस्त को इसने चांद के साउथ पोल पर लैंडिंग की थी। भारत ऐसा करने वाला पहला देश है। सतह और गहराई के तापमान में बड़ा अंतरः 28 अगस्त को लैंडर में लगे चास्टे पेलोड से पता चला था कि चंद्रमा की सतह और अलग-अलग गहराई पर तापमान में काफी अंतर है। सतह पर तापमान करीब 50 डिग्री सेल्सियस तो 80 की गहराई में माइनस 10°C था। चांद की सतह पर सल्फर खोजाः इसरो ने 29 अगस्त को बताया था कि रोवर पर लगे लिब्स पेलोड ने साउथ पोल पर सल्फर का पता लगाया है। इसके अलावा एल्युमीनियम, कैल्शियम, आयरन, क्रोमियम, टाइटेनियम, मैगनीज, सिलिकॉन और ऑक्सीजन का भी पता चला था। एक और पेलोड से सल्फर की पुष्टिः इसरो ने 31 अगस्त को बताया था कि रोवर पर लगे एक अन्य उपकरण अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोस्कोप (APXS) ने यहां सल्फर की पुष्टि की है। APXS ने इसके साथ ही कुछ अन्य माइनर एलिमेंट्स का भी पता लगाया था। रोवर और पेलोड का वाइब्रेशन रिकॉर्डः इसरो ने 31 अगस्त को बताया था कि लैंडर पर लगे लूनर सिस्मिक एक्टिविटी पेलोड (ILSA) ने रोवर और अन्य पेलोड के मूवमेंट से हुए वाइब्रेशन को रिकॉर्ड किया। 26 अगस्त को चांद पर हुई एक अन्य घटना भी रिकॉर्ड की गई थी।

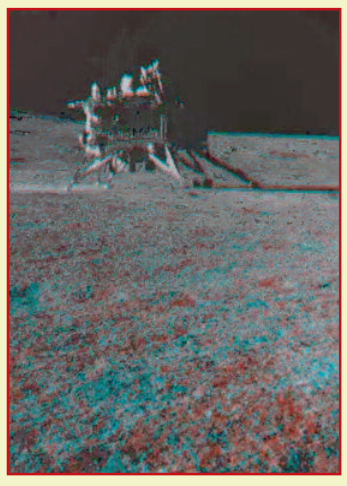

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

बेतुकी दलीलें

एक अपरिपक्व राजनेता और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहे कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के हालिया विवादित बयानों से सहमति का कोई आधार नजर नहीं आता। बल्कि ऐसा लगता है कि भारत विरोधी ताकतों के हाथ में खेलते हुए वे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की गरिमा बनाये रखने के लिये जरूरी विवेक खो बैठे हैं। कनाडा सरकार को बिना किसी आरोप पत्र और मुकदमे के यह निष्कर्ष निकालने में कोई समय नहीं लगा कि ब्रिटिश कोलंबिया में 18 जून को खालिस्तानी समर्थक चरमपंथी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंटों का हाथ हो सकता है। कनाडाई संसद को संबोधित करते हुए कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा कि उनकी सुरक्षा एजेंसियां सक्रिय रूप से मामले में आरोपों की पड़ताल कर रही हैं। यहां तक कि बेतुकी दलील दी कि कनाडाई धरती पर उसके नागरिक की हत्या में किसी विदेशी सरकार की संलिप्तता हमारी संप्रभुता का अस्वीकार्य उल्लंघन है। वहीं ट्रूडो के बयान के ठीक बाद कनाडा की विदेश मंत्री मेलानी जोली ने घोषणा की कि एक शीर्ष भारतीय राजनयिक को कनाडा से निष्कासित कर दिया गया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि कनाडा ने ऐसी तत्परता तब भी नहीं दिखायी जब विमानन इतिहास के बड़े आतंकी हमले का शिकार हुए भारतीय एअर इंडिया विमान में 329 लोग मारे गये थे। जिसमें ज्यादातर भारतीय मूल के कनाडाई लोग थे। तब भी बम विस्फोट के तीन महीने के भीतर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई या जांच के लिये हाउस ऑफ कॉमन्स में घोषणा करने में कोई तत्परता नहीं दिखाई गई थी, जैसे निज्जर प्रकरण में तीन माह में दिखायी गई। दरअसल, न तो कनाडा उस हमले को रोक सका वहीं उसने जांच में लीपापोती की थी। उस मामले में केवल एक व्यक्ति को दोषी ठहराया गया, वह भी झूठी गवाही के आधार पर। बल्कि एक निंदनीय रिपोर्ट में जस्टिस जॉन मेजर कमीशन ने उड़ान से पहले की त्रुटि, असावधानी व प्रबंधन अक्षमता जैसी बेबुनियाद दलीलें दी थीं। बहरहाल, यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा कि कनिष्क विमान हादसे में मरे सैकड़ों लोगों को न्याय से वंचित करने वाली कनाडाई सरकार अब संदिग्ध व्यक्ति की हत्या से परेशान है। वह व्यक्ति जिस पर भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने पंजाब में आतंकवाद को पुनर्जीवित करने के प्रयासों का आरोप लगाया था। इसके बावजूद भी कनाडा सरकार के पास भारतीय एजेंटों द्वारा हत्या के अकाट्य सबूत हैं, तो कनाडा सरकार को भारत सरकार से इन प्रमाणों को साझा करना चाहिए। यह निर्विवाद तथ्य है कि बिना जांच-पड़ताल के निष्कर्ष पर पहुंचने वाले ट्रूडो भारत के लिये गंभीर चुनौती खड़ी कर रहे हैं। सही मायनों में उनका यह फैसला कटरपंथी समूहों को बढ़ावा देने वाला है। जो भारतीय क्षेत्रीय संप्रभुता को खतरे में डालने के कुत्सित प्रयासों में लगे रहते हैं। कनाडा सरकार की बेतुकी व अतार्किक कार्रवाई के जवाब में नई दिल्ली द्वारा एक कनाडाई राजनयिक को निष्कासित करना जैसे को तैसे वाला जवाब है। ओटावा को अपने तौर-तरीके सुधारने के लिये बाध्य करने के लिये ऐसी राजनयिक दृढ़ता जरूरी है। बहरहाल, मौजूदा हालात में यह नहीं लगता कि दोनों देशों के संबंध जल्दी ही पटरी पर लौटेंगे। दरअसल, कनाडा के प्रधानमंत्री की अल्पमत सरकार को उन तत्वों का समर्थन है, जो भारत विरोधी अलगाववादियों की पीठ पर हाथ रखते हैं।

आज का राशीफल

मेष जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। रोजी के अवसर बढ़ेंगे। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। किसी मूल्यवान वस्तु के चोरी या खोने की आशंका है। व्यावसायिक मामलों में लाभ मिलेगा।

वृषभ आर्थिक मामलों में सुधार होगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। मांगलिक उत्सव में भाग लेंगे। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी।

मिथुन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। किसी कार्य के सम्पन्न होने से आपके प्रभाव तथा वर्चस्व में वृद्धि होगी। संतान या शिक्षा के कारण चिंतित हो सकते हैं। रचनात्मक प्रयास फलीभूत होंगे।

कर्क आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दूसरों से सहयोग लेने में सफल होंगे। विभागीय समस्या आ सकती है।

सिंह पारिवारिक जनों के साथ सुखद समय गुजरेगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। किसी रिश्तेदार के कारण तनाव हो सकता है।

कन्या जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। आय के नए स्त्रोत बनेंगे। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। मांगलिक उत्सव में हिस्सेदारी होगी। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें।

तुला प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। किया गया श्रम सार्थक होगा। संबंधित अधिकारी के कृपा पात्र होंगे। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे।

वृश्चिक दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। राजनैतिक महात्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

धनु संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नेत्र विकार की संभावना है। मन अशान्त रहेगा। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें।

मकर पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। संबंधित अधिकारी से तनाव मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। कोई पारिवारिक व व्यावसायिक समस्या आ सकती है।

कुम्भ जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। किसी अज्ञात भय से ग्रसित रहेंगे। क्रोध व भावुकता में लिया गया निर्णय कष्टकारी होगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे।

मीन पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सुखद परिवर्तन की दिशा में व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। रक्तचाप में वृद्धि होगी।

शिखर सम्मेलन से विदेशी नीति को नये आयाम

जी. पार्थसारथी

एक ऐसे सम्मेलन की मेजबानी, जिसका मंतव्य वैश्विक आर्थिक चुनौतियों का सामना करना और भागीदार विश्व की अग्रणी आर्थिक ताकत के तौर पर 19 देश हों, तिस पर, हर कोई न सिर्फ एक शक्ति है बल्कि कई मुद्दों पर जिनके विचार धुर-विरोधी हैं, इस स्तर का आयोजन आसान काम नहीं है। पर भारत ने यह काम बहुत उम्दा कर दिखाया और नई दिल्ली के जी-20 शिखर सम्मेलन में परिणाम मिले। शायद कइयों को नतीजों पर या सम्मेलन संचालन पर आलोचनाएं करने का अवसर मिलने की आस थी। परंतु भारत की कथित कमियां निकालने पर आमादा चीनी मीडिया के निरंतर आलोचना अभियान के अलावा नई दिल्ली शिखर सम्मेलन के संचालन या निर्णयों को व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सहमति और समर्थन मिला है। रूस के साथ युद्धरत यूक्रेन द्वारा सम्मेलन-घोषणापत्र की आलोचना पूर्वानुमानित थी। विदेश मंत्री जयशंकर और उनकी टीम ने खासा वक्त और मेहनत लगाकर सुनिश्चित किया कि सम्मेलन-प्रस्ताव अमेरिका, रूस और चीन और बृहद अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को स्वीकार्य हो। भारत की लीक रही कि संवेदनशील मुद्दों पर निरोल राजनीतिक कारणों से आलोचनात्मक रुख रखने से कुछ हासिल नहीं होने वाला। रोचक कि पाकिस्तान के प्रभावशाली और जिम्मेवार मीडिया के एक वर्ग ने भी नई दिल्ली में चली गतिविधियों की तारीफ की है। कराची स्थित शिक्षाविद ्डॉ. मुनीस अहमर ने कहा 'पिछले दो दशकों में वैश्विक अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षा और अनुसंधान क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले भारत के लिए जी-20 का सफल आयोजन एक अन्य उपलब्धि है। जी-20 सम्मेलन की कथित खामियां खोजने की बजाय यह वह सबक है, जो पाकिस्तान को भारत से सीखना चाहिए।' सम्मेलन के समक्ष सबसे विवादास्पद मुद्दा यूक्रेन-रूस युद्ध था, क्योंकि फिलहाल रूस-चीन और पश्चिमी जगत धुर विरोधी हैं। इस मुद्दे पर दोनों पक्षों के बीच जो पाट है, उस पर पुल बांधने की कोई गुंजाइश नहीं लगती थी। यह भी स्पष्ट था कि पश्चिमी मुल्क रूस की निंदा करवाकर नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे और रूस-चीन एवं कई अन्य देश इसका पुरजोर प्रतिरोध। वैसे भी, यूक्रेन के दक्षिणी समुद्र तट पर स्थित क्रीमिया पर रूस के दावे के पीछे तर्क लगता है क्योंकि 1783 से, ज़ारशाही द्वारा जीते जाने के बाद से, यह रूसी साम्राज्य का हिस्सा रहा। इसके अलावा, सदियों से क्रीमिया में रूस का दक्षिणी नौसैन्य बेड़े का अड्डा है। वर्ष 1954 में मुख्यतः प्रशासनिक कारणों से इसको सोवियत संघ का हिस्सा रहे यूक्रेन गणराज्य को सौंप दिया गया। ऐतिहासिक रूप से क्रीमिया आजाद यूक्रेन का हिस्सा नहीं रहा। क्रीमिया पर रूस का दावा जायज लगता है, यूक्रेनी सरकार से जिस प्रकार का संबंध दक्षिणी हिस्से में बसे रूसी बहुल लोगों का है, उसी तर्ज पर दोनों पक्षों को स्वीकार्य एक व्यावहारिक प्रबंधन व्यवस्था बनाने की जरूरत है। जाहिर है दक्षिण यूक्रेन के इलाकाई विवाद का सैन्य हल नहीं हो सकता, यह उपाय यूक्रेन की सार्वभौमिकता का आदर करते हुए और वहां बसे रूसी भाषी लोगों के हक सुनिश्चित करके निकलेगा। यूक्रेन मुद्दे पर सर्वसम्मति बनाने में भारतीय राजनयिकों की मुख्य भूमिका अहम रही। भारत के फार्मूले में किसी मुल्क की आलोचना करने से बचा गया और परमाणु अस्त्रों के प्रयोग से इतर अंतर्राष्ट्रीय मानववादी कानून के सिद्धांत को सर्वोच्च रखने का आह्वान किया गया। हालांकि सम्मेलन द्वारा स्वीकार किए गए भारतीय प्रस्ताव की आलोचना यूक्रेन ने की है। परंतु जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज़ का कहना है कि भारतीय मसौदे में इस बात पर जोर रहना कि हिंसा प्रयोग से मुल्कों की क्षेत्रीय अखंडता भंग नहीं की जानी चाहिए, एक सुस्पष्ट स्थिति है। अलबत्ता रूस ने भारत द्वारा तैयार प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया और बाइडेन प्रशासन का भी समर्थन मिला। यूक्रेन युद्ध का सबसे बुरा असर उन समुद्री मार्गों का बंद होना है, जिससे होकर रूस और यूक्रेन का गेहूं अफ्रीकी देशों को पहुंचता है। तनाव बढ़ने के साथ, रूस ने काला सागर खाद्यान्न समझौते के अंतर्गत अफ्रीकी मुल्कों को अनाज और खाद की आपूर्ति से हाथ खींच लिया, जबकि उन्हें इसकी सख्त जरूरत है। जरूरतमंद देशों तक खाद्यान्न पहुंचाने के लिए आवागमन गलियारा तुरंत बहाल करने के लिए बैठक में जोरदार मांग उठी। उम्मीद है रूस और यूक्रेन इस मांग का आदर करेंगे। जी-20 नेतृत्व, जिनके हाथ में विश्व की कुल अर्थव्यवस्था का 85 फीसदी है, इस बिंदु पर अडिग हैं कि परमाणु हथियारों का प्रयोग या करने की धमकी देना सिरे से अस्वीकार्य है। जी-20 शिखर सम्मेलन वार्ता का ध्यान मुख्यतः अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय और आर्थिक विषयों पर केंद्रित रहा। नई दिल्ली सम्मेलन में भी यह विमर्श आगे बढ़ा। यूरोपियन यूनियन ने सऊदी अरब, यूएई, भारत, जर्मनी, इटली, फ्रांस और अमेरिका को साथ लेकर, भारत-मध्य एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) बनाने की पहल की है। यह परियोजना बेहतर संपर्क और आर्थिक एकीकरण के साथ एशिया, अरब की खाड़ी और यूरोपियन मुल्कों के आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी। आईएमईसी परियोजना में दो अलग गलियारे होंगे, पूरबी गलियारा भारत को अरब की खाड़ी क्षेत्र से और उत्तरी गलियारा अरब की खाड़ी को यूरोप से जोड़ेगा। इसमें रेल मार्ग होगा, जिसके पूरा होने पर एक भरोसेमंद, किफायती, अंतर्राष्ट्रीय, जहाज-से-रेलमाल ढुलाई नेटवर्क बनेगा, जो वर्तमान नौवहनीय एवं सड़क परिवहन मार्ग व्यवस्था में अतिरिक्त क्षमता जोड़ेगा। इससे भारत और यूएई, सऊदी अरब, जॉर्डन, इस्राइल और यूरोप के मध्य माल एवं सेवाएं पहुंचाई जा सकेंगी। इस परियोजना के क्रियान्वयन पर वार्ता जल्द शुरू होने की उम्मीद है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने नई दिल्ली शिखर वार्ता में अनुपस्थित रहना चुना, इसको भारत के प्रति उनका पूर्वाग्रह माना जा रहा है। सनद रहे, चीन की बहु-प्रचारित परियोजना 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' के हश्र में भागीदार देश इसके लिए चीन से लिया कर्ज उतारने लायक नहीं रहे। चीनी 'मदद' के लगभग सभी प्राप्तकर्ता न चुकाने योग्य ऋण के दलदल में धंस चुके हैं। परियोजना के तहत जो सड़कें बनी हैं, उनमें ज्यादातर का निर्माण अलाभकारी और अनुपयोगी है क्योंकि इस्तेमाल बहुत कम है। सम्मेलन को लेकर आम लोगों की रुचि मुख्य रूप से भारत-अमेरिका संबंध और हिंद महासागर क्षेत्र के घटनाक्रम पर रही, लेकिन मीडिया और लोगों की नज़र भारत के लिए सबसे अहम रिश्ते यानी अरब देशों से, खासकर सऊदी अरब और यूएई, पर ज्यादा नहीं रही। इन दो अग्रणी खाड़ी मुल्कों के साथ भारत के संबंधों में लगातार सुधार आया है। भारत ने समूचे हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती जा रही चुनौतियों का सामना करने के लिए चुपचाप रहकर काम किया है, ऐसे एक प्रयास में, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाकार अजीत डोभाल और उनके अमेरिकी समकक्ष जेक स्लीवन की सऊदी अरब यात्रा रही, जिसका मकसद सऊदी अरब-अमेरिका संबंधों की पुनर्स्थापना था। इसके परिणाम में नई दिल्ली में बाइडेन और युवराज सलमान के बीच मित्रतापूर्ण आदान-प्रदान रहा। युवराज सलमान ने इससे पहले बाइडेन के कुछ असहज बयानों पर तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की थी। आईएमईसी में यूएई की भागीदारी का परिणाम है कि सुल्तान शेख अहमद बिन ज़ायद दिल्ली आए और गलियारा संधि पर हस्ताक्षर किए। खाड़ी क्षेत्र में भारत की सामरिक उपस्थिति को भारत, इस्राइल, यूएई और अमेरिका द्वारा बनाए आई2यू2 गुट से भी बल मिला है। यह आर्थिक और सुरक्षा सहयोग के लिए उपयोगी तंत्र मुहैया करवाता है। जहां एक ओर चीन अपने लिए ज्यादा पसंदगी नहीं बनवा पाया और उसकी 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' परियोजना से ज्यादातर मुल्क छिटकने लगे हैं वहीं आईएमईसी के भागीदारों के लिए इसका सामरिक असर एकदम उलट रहेगा।

लेखक पूर्व वरिष्ठ राजनयिक हैं।

27 साल से इंतजार में है महिला आरक्षण व्यवस्था!

(लेखक- डॉ श्रीगोपाल नारसन)

सन 1996 के बाद से कई बार महिला आरक्षण विधेयक संसद के पटल पर रखा गया और हर बार इसे विरोध का ही सामना करना पड़ा।सन 2019 के लोकसभा चुनाव से भी दो साल पहले सन 2017 में कांग्रेस अध्यक्ष रहीं सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम महिला आरक्षण विधेयक को लेकर पत्र लिखा था। महिला आरक्षण बिल 2010 के राज्यसभा से पास होने के बाद भी लोकसभा में पेश नहीं हो सका था, इसी वजह से अभी तक यह महिला आरक्षण विधेयक अधर में लटका हुआ है। महिला आरक्षण विधेयक का सिलसिला 12 सितंबर सन 1996 से शुरू हो गया था,उस समय भी यह बिल पटल पर रखा गया, लेकिन सदन में विरोध के कारण यह विधेयक पास नहीं हो सका , इसके बाद सन 1999,सन 2003,सन 2004 और सन 2009 में भी महिला आरक्षण बिल के पक्ष में माहौल नहीं बन सका, इस कारण यह विधेयक पास नहीं हो सका।लेकिन अब नई संसद में कदम रखते ही फिर महिला आरक्षण विधेयक उस समय चर्चाओं में आ गया जब इसे पुनः लोकसभा के पटल पर रखा गया।महिला आरक्षण की बाबत बिल लाने की बात एक दिन पहले ही पुरानी संसद में कांग्रेस ने की थी। इस मुद्दे पर आखिरी बार कुछ सार्थक कदम सन 2010 में उठाया गया था, जब राज्यसभा ने हंगामे के बीच बिल पास कर दिया था और मार्शलों ने कुछ सांसदों को बाहर कर दिया था, जिन्होंने महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण का विरोध किया था, हालांकि यह विधेयक रद्द हो गया क्योंकि यह बिल लोकसभा से पारित नहीं हो सका था। जब संसद के पटल पर पहली बार सन 1996 में महिला आरक्षण बिल रखा गया था, उस समय में एचडी देवगौड़ा की सरकार थी। उक्त महिला आरक्षण बिल को विरोधों का सामना करना पड़ा था। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक पेश किया। इस विधेयक में महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण किया गया है। लोकसभा में भी अब महिलाओं के लिए 181 सीटें आरक्षित होंगी।महिलाओं को लोकसभा और अलग-अलग राज्यों की विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। यह कानून बनने के बाद सदन में महिलाओं की संख्या कम से कम 33 प्रतिशत बढ़ जाएगी। महिला आरक्षण की अवधि 15 साल तक के लिए नियत की गई है। भविष्य में इसकी अवधि बढ़ाने का अधिकार लोकसभा के पास होगा। नारी शक्ति वंदन अधिनियम बिल मंजूर हुआ तो लोकसभा और राज्यसभा के साथ राज्यों की विधानसभाओ की तस्वीर बदल जाएगी। अभी तक देश के आधे से अधिक राज्यों की विधानसभाओ में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 10 प्रतिशत से भी कम है। हिमाचल और पुडुचेरी जैसे राज्यों में तो सिर्फ एक-एक महिला विधायक है।देश के विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं में महिला विधायकों की संख्या भी बढ़ जाएगी। जिससे देश की राजनीति भी बदलेगी। एक बदलाव और होने की उम्मीद है, वह यह कि अब रानी की कोख से सिर्फ राजा नहीं निकलेगा, बल्कि गरीब-गुरबा के पेट से रानी भी पैदा हो सकेगी। जब से लोकतंत्र में हक मिला है तब गरीब की कोख से निकले बेटे राजा बनते रहे है। परन्तु अब बेटियां या फिर माताएं बहने भी जनप्रतिनिधि बन सकेंगी। अभी तक देश की 19 राज्यों की विधानसभाओ में महिलाओं की भागीदारी 10 प्रतिशत से भी कम है। महिलाओं की भागीदारी का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 68 सदस्यों वाली हिमाचल प्रदेश की विधानसभा में सिर्फ एक महिला विधायक है। पिछले 50 साल में हिमाचल से सिर्फ तीन महिला लोकसभा सांसद बनी है। 30 सदस्यों वाली पुडुचेरी विधानसभा में भी सिर्फ एक महिला विधायक है। उत्तराखंड की 70 सीटों वाली विधानसभा में कभी भी महिला विधायकों की संख्या आठ से अधिक नहीं हुई है। बड़े राज्यों में भी महिलाओं को उनकी आबादी के हिसाब से प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है।

33 प्रतिशत महिला आबादी को आरक्षण मिले तो उत्तर प्रदेश में विधानसभा की 132 सीटों पर महिलाओं पर कब्जा हो जाएगा। अभी तक 403 विधायकों वाली विधानसभा में सिर्फ 48 महिलाएं विधायक हैं। उत्तर प्रदेश से महिला आरक्षण लागू होने पर 26 महिलाएं लोकसभा में प्रतिनिधित्व कर सकेगी। बिहार विधानसभा में 243 सीटें हैं और फिलहाल 26 महिला विधायको की सदन में मौजूदगी है। महिला आरक्षण विधेयक पारित होते ही 80 सीटों पर महिलाओ की दावेदारी होगी। जबकि लोकसभा में 13 महिलाएं बिहार से चुनी जाएंगी। मध्यप्रदेश की 230 सदस्यों वाली विधानसभा में भी 76 महिला विधायक चुनी जाएंगी। मध्यप्रदेश में लोकसभा की 29 सीट है, इस दृष्टि से 10 सीटों पर महिलाओं का कब्जा होगा। 288 विधानसभा सीटों वाले महाराष्ट्र में सिर्फ 23 महिला विधायक हैं। 48 लोकसभा सीटों में 8 पर महिलाओं को सन 2019 में जीत मिली थी। नारी शक्ति वंदन अधिनियम बिल 2023 पारित होने पर विधानसभा में 96 और लोकसभा में 16 महिलाएं महाराष्ट्र से चुनी जाएंगी।इसी तरह राजस्थान की 203 सदस्यों वाली विधानसभा में महिला विधायकों की संख्या 27 है, जबकि 3 महिलाएं ही लोकसभा में राज्य से चुनी गईं है। राजस्थान में लोकसभा की 25 सीटें हैं। महिला आरक्षित होने के बाद राज्य से 8 महिला सांसद चुनी जाएंगी और विधानसभा में भी 66 महिला सदस्य चुनी जाएंगी। अभी तक दिल्ली विधानसभा में सिर्फ 8 महिलाएं हैं, जबकि कुल सीटों की संख्या 70 है।महिला बिल पास होने पर दिल्ली में 23 महिलाएं विधायक होंगी व 3 महिलाएं सांसद चुनी जाएंगी। 117 विधायकों वाले पंजाब में भी 39 सीटों पर महिलाओं का कब्जा होगा। 2022 में हुए चुनाव के दौरान पंजाब विधानसभा में सिर्फ 13 महिलाओं को जीत मिली थी। 2022 के चुनाव में पंजाब के सभी राजनीतिक दलों ने मिलाकर 93 महिलाओं को टिकट दिया था।जिनमे से 13 महिलाएं ही जीत पाई।

विचार मंथन

महिला आरक्षण बिल चुनावी ढोल, बजेगा-शोर करेगा, शांत हो जाएगा

(लेखक-सनत जैन)

महिला आरक्षण बिल लोक सभा और राज्यसभा से सर्वसम्मति से पारित हो गया है। राज्यसभा में महिला आरक्षण बिल को लेकर अधिकांश सदस्यों ने चर्चा में भाग लिया। सरकार ने इस बिल को नारी शक्ति वंदन अधिनियम का नाम दिया है। यह एक अच्छी शुरुआत है, पक्ष और विपक्ष ने आगामी चुनाव को ध्यान में रखते हुए महिला आरक्षण बिल को पक्ष भी मान रहा है, और विपक्ष भी मान रहा है। यह संयोग महिलाओं की किस्मत से बना है। विपक्षी गठबंधन इंडिया के सहयोगी दलों ने लोकसभा और राज्यसभा में महिला आरक्षण बिल्कुल तुरंत लागू करने की मांग की है। इंडिया गठबंधन एवं कांग्रेस नेताओं ने महिलाओं के आरक्षण में एसटी /एससी, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक महिलाओं को आरक्षण का लाभ दिए जाने की मांग संसद में की। इस मांग को सरकार ने नहीं माना संसद में कहा कि कानूनी प्रावधानों को पूरा के बाद ही कानून लागू करने की बात कही है। लोकसभा और राज्यसभा में सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि यह विधेयक 2029 के लोकसभा चुनाव से ही लागू होगा, उसके पहले नहीं हो सकता है। सरकार ने विशेष सत्र बुलाया था और महिला आरक्षण बिल को चुनाव के लिए एक मास्टर स्ट्रोक बताया था। लोकसभा और राज्यसभा में पक्ष और विपक्ष ने पक्ष रखा है, उससे इतना तय है, महिला आरक्षण विधेयक का ऊँट किसी भी करवट बैठ सकता है। इससे सत्ता पक्ष को फायदा भी हो सकता है और सत्ता पक्ष को बड़ा नुकसान भी हो सकता है, विपक्षी गठबंधन इंडिया जिस तरह से पिछड़ा वर्ग को महिला आरक्षण में शामिल करने की मांग कर रहा है। बिल पास होने के बाद सभी वर्गों की महिलाओं को आरक्षण देने की बात कर रहा है। उसका विपक्ष को फायदा मिल सकता है। लोकसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए महिला आरक्षण बिल और सनातन धर्म को भाजपा मास्टर स्ट्रोक मान रही है। सनातन धर्म को लेकर एक बड़ा विवाद तमिलनाडु से शुरू हुआ था। यह विवाद महिला आरक्षण बिल से भी जुड़ गया है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने कहा सनातन धर्म महिला विरोधी है। नई संसद भवन के शिलान्यास और उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को आमंत्रित नहीं किया गया। जबकि वह दोनों सदन के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करती हैं। राष्ट्रपति संवैधानिक प्रमुख है। इसके बाद भी महिला आदिवासी राष्ट्रपति को इसलिये नहीं बुलाया गया कि सनातन धर्म की परंपरा के अनुसार विधवा होने के कारण शुभ काम और धार्मिक कार्यों से दूर रखा जाता है। महिला आरक्षण बिल में चल रही बहस को सनातन धर्म से भी जोड़ दिया गया है। इसके पहले भी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भी हिंदू मंदिरों में प्रवेश एवं पूजा पाठ से रोकने का प्रयास किया जाता था। कभी उन्हें विधवा के रूप में और कभी पारसी के रूप में और कभी मुस्लिम कहकर उनका समय-समय पर अपमान सनातन धर्म में हुआ है। बहरहाल नारी शक्ति बंधन अधिनियम लोकसभा और राज्यसभा से पास हो गया है। पिछड़े और एससी एसटी वर्ग को शामिल करने की मांग को लेकर पक्ष और विपक्ष के बीच में संसद के अंदर तलख बहस भी हुई है। इंडिया गठबंधन और कांग्रेस ने पूरा दबाव बनाया है कि पिछड़ा वर्ग को भी इसमें शामिल किया जाए। राहुल गांधी ने लोकसभा में सरकार को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार के 90 सचिव है। इसमें मात्र 3 पिछड़ा वर्ग के है। सरकार 50 फीसदी पिछड़ों की उपेक्षा कर रही है। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन महिला आरंक्ष को तुरन्त लागू करने तथा महिलाओं को वर्गवार आरक्षण देने का चुनावी मुद्दा बनायेगा। महिला आरक्षण बिल तुरंत लागू किया जाए। इसके समर्थन में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जैसे तीन किसान कानून, नोटबंदी, एनआरसी धारा 370 इत्यादि के कानून लागू किए गए हैं। वैसे ही महिला आरक्षण बिल को तुरंत लागू किया जाए। महिला आरक्षण बिल चुनावी मुद्दा बन गया है। पक्ष एवं विपक्ष चुनाव मैदान में इसी अस्त्र का उपयोग करेगा। सत्ता पक्ष सनातन और हिन्दू धुव्रीकरण के बल में चुनाव मैदान में उतरेगा। वहीं विपक्ष 50 फीसदी महिलाओं के वोट बैंक और मंडल की राजनीति में गैर सनातनियों जिसमें हरिजन, दलित, पिछड़े, आदिवासी जिनकी आबादी 50 फीसदी है। उनके सहारें चुनाव मैदान में सत्ता पक्ष से भिड़ेगा। महिला आरक्षण चुनावी मुद्दा बन चुका है।

सत्ता पक्ष एवं विपक्ष अपने तरकश से घोषणाओं के तीर छोड़कर चुनाव जीतने की रणनीति तैयार करेंगे। महिला आरक्षण बिल चुनावी ढोल होगा। जब तक थाप पड़ेगी, शोर करेगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सोने और चांदी की कीमत में मिलाजुला रुख

- सोना 58,842 रुपए और चांदी 73,215 रुपए

नई दिल्ली । वायदा बाजार में शुक्रवार को सोने-चांदी की कीमत में मिला-जुला रुख देखने को मिल रहा था। अक्टूबर, 2023 में डिलीवरी वाले सोने में 20 रुपए की तेजी के साथ 58,842 रुपए प्रति 10 ग्राम के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। इससे पिछले सत्र में अक्टूबर कॉन्ट्रैक्ट वाले सोने का भाव 59,822 रुपए प्रति 10 ग्राम पर रहा था। एमसीएक्स पर दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट वाले सोने में एक रुपया की तेजी के साथ 59,344 रुपए प्रति 10 ग्राम के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। इससे पिछले सत्र में दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट वाले सोना 59,343 रुपए प्रति 10 ग्राम पर रहा था। वहीं फरवरी, 2024 में डिलीवरी वाले सोने में 121 रुपए की गिरावट के साथ 59,720 रुपए प्रति 10 ग्राम के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। इससे पहले गुरुवार को फरवरी कॉन्ट्रैक्ट वाले सोने का भाव 59,841 रुपए प्रति 10 ग्राम पर रहा था। वहीं एमसीएक्स पर दिसंबर 2023 में डिलीवरी वाली चांदी में 147 रुपए की तेजी के साथ 73,215 रुपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। इससे पिछले सत्र में दिसंबर कॉन्ट्रैक्ट वाली चांदी की कीमत 73,068 रुपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर रही थी। इसी तरह मार्च, 2024 में डिलीवरी वाली चांदी में 183 रुपए की तेजी के साथ 74,654 रुपए प्रति किलोग्राम के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। इससे पिछले सत्र में मार्च कॉन्ट्रैक्ट वाली चांदी की कीमत 74,471 रुपए प्रति किलोग्राम पर रही थी। कॉमेक्स पर दिसंबर 2023 में डिलीवरी वाले सोने में 0.21 फीसदी की तेजी के साथ 1,943.70 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर ट्रेडिंग हो रही थी। स्पॉट मार्केट में भी सोने के भाव में 0.21 फीसदी की बढ़त के साथ 1,924.02 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

विदेशी नहीं, अब देसी प्रोडक्ट्स से सजेगी इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर इंडस्ट्री, आ सकते हैं आयात पर पाबंदी जैसे नियम

नई दिल्ली: इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने शुक्रवार को कहा कि सरकार का लक्ष्य अगले तीन वर्षों में स्थानीय उत्पादन के जरिए देश की 70 फीसदी तक आईटी हार्डवेयर आवश्यकता को पूरा करना है। साथ ही गैर-भरोसेमंद स्रोतों से आयात पर निर्भरता कम करना है। चंद्रशेखर ने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय उद्योग जगत के लोगों के साथ आईटी हार्डवेयर आयात नियमों का एक मसौदा साझा करेगा। मकसद गैर-भरोसेमंद स्रोतों से आपूर्ति पर निर्भरता को कम करना है। मंत्री ने कहा, वर्तमान में डिजिटल इकोसिस्टम के लिए हमारी करीब 80 फीसदी आपूर्ति आवश्यकता आयात से पूरी होती है। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि जो भी स्रोत हैं, उन पर भरोसा किया जाए। विश्वास बढ़ाने के लिए आपूर्ति श्रृंखला में भारतीय घटक बढ़ना जरूरी होगा। आज हमारी आपूर्ति आवश्यकता का 8-10 प्रतिशत भारत से आता है, हम अगले तीन वर्षों में इसे 65-70 प्रतिशत करना चाहते हैं।

इन कंपनियों ने किया पीएलआई में आवेदन

डेल, एचपी और लेनोवो सहित कम से कम 40 कंपनियों ने योजना अवधि के दौरान 4.65 लाख करोड़ रुपये के पर्सनल कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, सर्वर तथा अन्य उपकरण बनाने की प्रतिबद्धता जाहिर करते हुए आईटी हार्डवेयर में उत्पादन प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) के लिए आवेदन किया है।

आयात पाबंदी पर शेयर करेंगे मसौदा नियम

यदि सभी कंपनियां योजना के तहत चयनित की जाती हैं तो सरकार को 17,000 करोड़ रुपए के बजटीय आवंटन के मुकाबले प्रोत्साहन राशि को 22,890 करोड़ रुपए तक बढ़ाने की आवश्यकता होगी। मंत्री ने कहा कि वह दिन में उद्योग जगत के लोगों से मिलेंगे और प्रस्तावित आईटी हार्डवेयर आयात पाबंदी पर मसौदा नियम साझा करेंगे। चंद्रशेखर ने कहा, आज हम उद्योग जगत के लोगों के साथ बैठक कर रहे हैं और उनके साथ आयात प्रबंधन प्रणाली का एक मसौदा साझा कर रहे हैं। इसका मकसद उन स्रोतों से आयात पर उच्च निर्भरता से निपटना है जो पूरी तरह से विश्वसनीय नहीं हैं।

वैश्विक बांड सूचकांक में भारत के शामिल होने से आएगा 26 अरब डॉलर का परोक्ष प्रवाह

नई दिल्ली। जेपी मॉर्गन सरकारी बॉन्ड इंडेक्स-इमर्जिंग मार्केट्स (जेपीएम जीबीआई-ईएम) में भारत के शामिल होने से देश में 26 अरब डॉलर का परोक्ष निवेश प्रवाह आएगा। एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज ने एक नोट में यह बात कही।भारत के इस बांड सूचकांक में शामिल होने से देश में जोखिम प्रीमियम कम होगा, बांड बाजार में गहराई बढ़ेगी और राजकोषीय तथा चालू खाता घाटा कम करने में मदद मिलेगी। जेपी मॉर्गन जीबीआई-ईएम सूचकांक में भारत का बहुप्रतीक्षित समावेश 28 जून 2024 से प्रभावी होगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का 10 प्रतिशत का भारांक 10 महीनों में घट-बढ़ सकता है, जिससे 22 अरब डॉलर (अन्य छोटे सूचकांकों में वृद्धि की स्थिति में 26 अरब डॉलर) का परोक्ष प्रवाह होगा। हालाँकि, वास्तविक प्रवाह अधिक हो सकता है, जो बाज़ार की गतिशीलता और सक्रिय प्रवाह पर निर्भर करता है। यह तुरंत एफटीएसई और ब्लूमबर्ग इंडेक्स में शामिल होने का मार्ग प्रशस्त नहीं करता है, जिसमें अधिक कठोर शर्तें (एफपीआई कराधान/यूरोक्लियर) हैं। लेकिन मध्यम अवधि में इसका प्रदर्शन प्रभाव हो सकता है क्योंकि कम जोखिम वाला प्रीमियम सकारात्मक बाह्यताओं को ट्रिगर कर सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि निकट भविष्य में वैश्विक बाजारों पर नज़र रखते हुए शुरुआती तेजी के बाद बॉन्ड पर मिलने वाले ब्याज और भारतीय रुपये में गिरावट शुरू होगी। एक बार शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव के बाद इस कदम से ऋण बाजार में ताजा सक्रिय प्रवाह बढ़ सकता है। इससे सरकारी प्रतिभूतियों की तरलता और स्वामित्व आधार बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह ब्याज दरों और विदेशी मुद्रा बाजारों के लिए अच्छा संकेत होना चाहिए, जिससे बड़े पैमाने पर अर्थव्यवस्था के लिए उधार लेने की लागत कम होगी और अधिक जवाबदेह राजकोषीय नीति-निर्माण होगा।

रुपया 38 पैसे तेज होकर 82.75 प्रति डॉलर

मुंबई । अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में शुरुआती कारोबार में रुपया शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 38 पैसे की बढ़त के साथ 82.75 पर पहुंच गया। जेपी मॉर्गन बांड सूचकांक में भारत को शामिल करने से निवेशकों की धारणा को बढ़ावा मिला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.75 पर खुला, जो पिछले बंद स्तर की तुलना में 38 पैसे की बढ़त है। गुरुवार को रुपया 83.13 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.12 प्रतिशत की बढ़त के साथ 105.48 पर आ गया। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.61 प्रतिशत की बढ़त के साथ 93.87 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा था।

आईटेल एस23 प्लस भारत में 26 सितंबर को लॉन्च होने की उम्मीद, कीमत 15 हजार रुपये से भी कम

नई दिल्ली। आईटेल का लेटेस्ट मास्टरपीस एस23 प्लस काफी चर्चाओं में है। आईटेल मोबाइल इंडिया 26 सितंबर को भारत का पहला 3डी कर्व्ड एमोलेड डिस्प्ले से लैस स्मार्टफोन एस23 प्लस लॉन्च कर सकता है, जिसकी कीमत देश में 15,000 रुपये से भी कम होगी।सूत्रों ने शुक्रवार को आईएएनएस को बताया कि आईटेल एस23 प्लस में असाधारण कैमरा सेटअप होने की उम्मीद है। इसकी सबसे बड़ी खासियत 32 मेगापिक्सल अल्ट्रा-क्लियर फ्रंट कैमरा है, जो अपने सेगमेंट में एक नया मानक स्थापित कर रहा है। असाधारण डिस्प्ले के साथ कंबाइन यह कैमरा डिजिटल जरूरतों को पूरा करने के लिए आईटेल के समर्पण का एक स्पष्ट प्रमाण है। पहले, सूत्रों ने खुलासा किया था कि स्मार्टफोन उल्लेखनीय 6.78 इंच एफएचजी प्लस एमोलेड 3डी कर्व्ड स्क्रीन से लैस होगा, जो इस प्राइस रेंज में पहली स्क्रीन होने की उम्मीद है। इसके साथ आईटेल एक बड़ी छलांग लगा रहा है और 15,000 सेगमेंट में शानदार एंट्री कर रहा है, जो इंडस्ट्री के लिए एक बेंचमार्क स्थापित कर रहा है। यह लॉन्च यूजर्स के लिए डिजाइन एस्थेटिक और इमर्सिव व्यूइंग एक्सपीरियंस में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है।

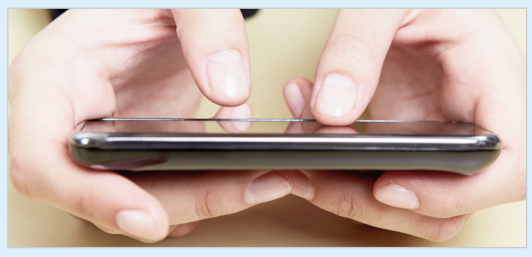

लगातार चौथे दिन लाल निशान पर बंद हुआ बाजार

निवेशकों के 12 हजार करोड़ स्वाहा

मुंबई ।

विदेशी बाजार से मिले कमजोर रुझानों के कारण आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार उतार-चढ़ाव के बाद लगातार चौथे दिन लाल निशान पर बंद हुए। शुक्रवार के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 221 अंक टूटा। वहीं, निफ्टी में भी 68 अंकों की गिरावट दर्ज हुई। जेपी मॉर्गन द्वारा अपने इमर्जिंग मार्केट इंडेक्स में भारतीय बॉन्ड को शामिल करने के फैसले से शेयर बाजार को दम मिला और शुरुआती कारोबार में तेजी आई, हालांकि थोड़ी देर बाद ही बाजार लाल निशाना पर आ गया। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 221.09 अंक की भारी गिरावट के साथ 66,009.15 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 66,445.47 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 65,952.83 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ निफ्टी में भी 68.10 अंक की गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 19,674.25 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 19,798.65 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 19,657.50 तक आया। शुक्रवार के कारोबार में सेंसेक्स के शेयरों में 13 शेयर हरे निशान पर बंद हुए। इंडसइंड बैंक, मारुति,एसबीआई, एमएंडएम और एशियन पेंट्स सेंसेक्स के टॉप 5 गेनर्स रहे। सबसे ज्यादा मुनाफा इंडसइंड बैंक के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 2.79 फीसदी तक चढ़े। वहीं, दूसरी तरफ सेंसेक्स के शेयरों में 17 शेयर लाल निशान पर बंद हुए। विप्रो, एचडीएफसी बैंक, पावर ग्रिड, अल्ट्राटेक सीमेंट और सन फार्मा सेंसेक्स के टॉप 5 लूजर्स रहे। सबसे ज्यादा नुकसान विप्रो के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 2.36 फीसदी तक गिर गए। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का कुल मार्केट कैप 22 सितंबर को घटकर 317.78 लाख करोड़ रुपये पर आ गया, जो इसके पिछले कारोबारी दिन 317.90 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप शुक्रवार को करीब 12 हजार रुपये घटा है यानी निवेशकों की संपत्ति में करीब 12 हजार करोड़ रुपये की गिरावट आई है।

'मेक इन इंडिया' आईफोन खरीदने के लिए सैकड़ों लोगों की लगी कतार

नई दिल्ली/मुंबई।

भारत में सैकड़ों एप्पल लवर्स के लिए शुक्रवार का दिन बेहद खास रहा, क्योंकि उन्हें नई दिल्ली के एप्पल साकेत और मुंबई के एप्पल बीकेसी के साथ-साथ अन्य एप्पल ऑथराइज्ड रीसेलर्स के स्टोर पर सुबह से ही लंबी कतारों के बीच 'मेक इन इंडिया' आईफोन 15 और स्थानीय रूप से असेंबल किए गए 15 प्लस मिलने लगे।एप्पल के दिल्ली और मुंबई दोनों रिटेल स्टोर्स पर, प्री-ऑर्डर करने वाले सैकड़ों लोग अपने डिवाइस लेने के लिए जल्दी ही कतार में लग गए। फरीदाबाद से एप्पल साकेत स्टोर पर आए 21 वर्षीय दिव्यम ने कहा, 'मेक इन इंडिया आईफोन 15' पाना बहुत अच्छा था, यह गर्व की अनुभूति थी। एप्पल ऑनलाइन पर अपने आईफोन की प्री-बुकिंग के बाद मैं इस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।'' कई खरीदारों को अपने हाथों में आईफोन 15 प्रो मैक्स बॉक्स के साथ भी देखा गया, जो देश में परिपक्व हो रहे प्रीमियमीकरण की प्रवृत्ति की पुष्टि करता है। एप्पल बीकेसी में भी लंबी कतारें देखी गईं, खुदरा कर्मचारी नए आईफोन और वॉच सीरीज 9 के पहले खरीदारों का उत्साह बढ़ा रहे थे। एप्पल को इस बार आईफोन 15 सीरीज के लिए प्री-ऑर्डर में लगभग 50 प्रतिशत का उछाल मिला। एप्पल ने पिछले साल के आईफोन 14 सीरीज के प्री-ऑर्डर को दोगुना कर दिया है, जिससे संकेत मिलता है कि कंपनी ने भारतीय स्मार्टफोन बाजार में गहरी पैठ बना ली है, साथ ही पहली बार उपयोग करने वालों की संख्या में बढ़ोतरी से भी प्रेरित है, जो एंड्रॉइड से एप्पल इकोसिस्टम में शिफ्ट हो रहे हैं। साइबरमीडिया रिसर्च के इनसाइट्स के अनुसार, आईफोन 14 सीरीज में 85 प्रतिशत से अधिक शिपमेंट नॉन-प्रो मॉडल थे। सीएमआर के हेड-इंडस्ट्री इंटेलिजेंस ग्रुप प्रभु राम ने आईएएनएस को बताया, इस साल, आईफोन 15 डायनेमिक आइलैंड और 48 मेगापिक्सल कैमरा जैसे पर्याप्त सुधारों के साथ सामने आया है, जो इसे अपग्रेडर्स और यहां तक कि संभावित स्विचर्स के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाता है। फाइनेसिंग तक आसान एक्सेस और ग्रेटर रीसेल वेल्यू देश में मुख्यधारा के यूजर्स के लिए प्रीमियम आईफोन को अधिक से अधिक सुलभ बना रहा है। काउंटरप्वाइंट रिसर्च के उपाध्यक्ष नील शाह के अनुसार, अब आईफोन 15 बेस वर्जन भारत में ही बनाया जा रहा है, अगर एप्पल आने वाले महीनों में नए आईफोन की कीमत को और अधिक आकर्षक बनाने का फैसला करता है, तो यह एक ब्लॉकबस्टर दिवाली सीजन हो सकता है। शाह ने कहा कि आईफोन सबसे महत्वाकांक्षी स्मार्टफोन में से एक है, आईफोन 15 सीरीज के लिए बड़े फीचर्स अपग्रेड के साथ मिलकर, तेजी से 'स्मार्टफोन डिपेंडेंट' यूजर्स को बेस्ट में अपग्रेड करने के लिए आकर्षित कर रहा है।

आईफोन निर्माता फॉक्सकॉन आईफोन 15 और 15 प्लस दोनों को तमिलनाडु के श्रीपेरंबुदूर प्लांट में असेंबल कर रहा है। दोनों 'मेक इन इंडिया' आईफोन दूसरे देशों में भी निर्यात किए जाएंगे, जो देश के लिए पहली बार है। ऐसा अनुमान है कि लॉन्च तिमाही में आईफोन 15 की शिपमेंट, जो भारत में बड़े पैमाने पर त्योहारी सीजन की शुरुआत करती है, 'मेक इन इंडिया' पहल में वृद्धि के कारण लगभग 65 प्रतिशत रहेगी।

केंद्र का लक्ष्य घरेलू उत्पादन के माध्यम से भारत की 70 प्रतिशत आईटी हार्डवेयर मांग को है पूरा करना

नई दिल्ली।

केंद्र सरकार तीन वर्षों के भीतर घरेलू उत्पादन के माध्यम से देश की आईटी हार्डवेयर की 70 प्रतिशत मांग को पूरा करने और गैर-भरोसेमंद स्रोतों से आयात पर निर्भरता में कटौती करने की योजना बना रही है। यह बात इलेक्ट्रॉनिक्स राज्य मंत्री और आईटी राजीव चंद्रशेखर ने शुक्रवार को कही।मंत्री ने पत्रकारों से कहा, ÷वर्तमान में, डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के लिए हमारी लगभग 80 प्रतिशत आपूर्ति आयात से आती है और हमारी आपूर्ति आवश्यकता का केवल 8-10 प्रतिशत भारत से आता है। हम अगले तीन वर्षों में इसे 65-70 प्रतिशत करना चाहते हैं। एचपी और डेल जैसी वैश्विक दिग्गज कंपनियों सहित करीब 40 कंपनियों ने पर्सनल कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, सर्वर और अन्य उपकरण बनाने के लिए कारखाने स्थापित करने के लिए आईटी हार्डवेयर पीएलआई (उत्पादकता से जुड़े प्रोत्साहन) योजना के तहत आवेदन किया है। योजना अवधि के दौरान मूल्य लगभग 4.65 लाख करोड़ रुपये बैठता है। आयात पर लगाए जा रहे प्रतिबंधों से घरेलू निवेश में बढ़ोतरी की उम्मीद है। चंद्रशेखर ने कहा कि गैर-भरोसेमंद स्रोतों से आयात पर निर्भरता को कम करने की रणनीति के हिस्से के रूप में दिन के अंत में उद्योग के भागीदारों के साथ आईटी हार्डवेयर आयात नियमों के मसौदे पर चर्चा की जाएगी। वरिष्ठ अधिकारी यह भी बताते हैं कि चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा अस्थिर स्तर तक बढ़ गया है और किसी भी स्थिति में एशियाई पड़ोसी से आयात कम करने की आवश्यकता है। सरकार ने पहले ही आयात पर रोक लगाने की घोषणा कर दी है और लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर के आयात के लिए नई लाइसेंसिंग व्यवस्था लागू होने से पहले, 31 अक्टूबर तक लगभग तीन महीने की संक्रमण अवधि दी है। सरकार ने एक अधिसूचना जारी की है कि आयात खेप को बिना लाइसेंस के 31 अक्टूबर तक मंजूरी दी जा सकती है और नवंबर से आयात की मंजूरी के लिए सरकारी परमिट की आवश्यकता होगी। आयात प्रतिबंधों से एप्पल और सैमसंग जैसी प्रौद्योगिकी कंपनियों पर भी असर पड़ने की उम्मीद है, जिनसे अब भारत में अपना निवेश बढ़ने की उम्मीद है।

वित्त मंत्रालय को जोखिमों के बावजूद चालू वित्त वर्ष में 6.5% की वृद्धि का भरोसा

नई दिल्ली:

वित्त मंत्रालय ने शुक्रवार को भरोसा जताया कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और मानसून की कमी के जोखिमों के बावजूद देश चालू वित्त वर्ष में 6.5 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल कर लेगा। इसका प्रमुख कारण कंपनियों की लाभप्रदता, निजी पूंजी निर्माण और बैंक ऋण वृद्धि का बेहतर होना है। वित्त मंत्रालय की अगस्त महीने की मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा गया है कि अप्रैल-जून तिमाही में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर के पीछे मजबूत घरेलू मांग, खपत और निवेश मुख्य वजह थी। जीएसटी संग्रह, बिजली खपत, माल ढुलाई आदि जैसे विभिन्न उच्च-आवृत्ति संकेतकों में भी वृद्धि दर्ज की गई। मासिक समीक्षा में वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी, अगस्त में मानसून की कमी का खरीफ एवं रबी फसलों पर असर जैसे कुछ जोखिमों का भी उल्लेख किया गया है। इसके मुताबिक इन जोखिमों का आकलन करने की जरूरत है। हालांकि सितंबर में हुई बारिश ने अगस्त में बारिश की कमी की काफी हद तक भरपाई की है। रिपोर्ट के मुताबिक, वैश्विक शेयर बाजारों में गिरावट आने से अब घरेलू शेयर बाजार में भी गिरावट का जोखिम बना हुआ है। इन जोखिमों की भरपाई कंपनी लाभप्रदता, निजी क्षेत्र के पूंजी निर्माण, बैंक ऋण वृद्धि और निर्माण क्षेत्र में गतिविधियां कर रही हैं। वित्त मंत्रालय की मासिक समीक्षा कहती है, ''कुल मिलाकर हम इन जोखिमों के साथ वित्त वर्ष 2023-24 के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहने के अनुमान को लेकर सहज बने हुए हैं।'' रिपोर्ट के मुताबिक, घरेलू निवेश की ताकत पूंजीगत व्यय पर सरकार के निरंतर जोर देने का नतीजा है। केंद्र सरकार के उपायों ने राज्यों को भी अपने पूंजीगत व्यय को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है। रिपोर्ट कहती है कि बाहरी मांग ने घरेलू वृद्धि प्रोत्साहन को पूरक बनाने का काम किया है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी की वृद्धि में शुद्ध निर्यात का योगदान बढ़ गया क्योंकि सेवाओं के निर्यात ने अच्छा प्रदर्शन किया। जुलाई एवं अगस्त के उच्च आवृत्ति संकेतकों से दूसरी तिमाही में भी वृद्धि दर की रफ्तार बने रहने की उम्मीद है।

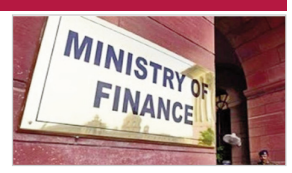

सभी सम्बन्ध पक्षों को चीनी के स्टॉक पोजीशन का खुलासा करने का निर्देश

नई दिल्ली ।

केन्द्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग ने देश में चीनी के सभी व्यापारियों / होल सेलर्स, रिटेलर, बिग चेन रिटेलर्स तथा मिलर्स / प्रोसेसर्स को उसके पास उपलब्ध चीनी के स्टॉक का विवरण सरकारी पोर्टल पर तत्काल अपलोड करने और प्रत्येक सोमवार को उसका अद्यतन (अपडेट) करने का निर्देश दिया है। प्रांतीय मुख्य सचिवों को प्रेषित पत्र में खाद्य विभाग ने कहा है कि घरेलू प्रभाग में चीनी की पर्याप्त आपूर्ति एवं उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा उपभोक्ताओं को उचित दाम पर इसे मुहैया करवाने की दृष्टि से यह कदम उठाया गया है और इस पर कड़ी निगरानी की जरूरत है। स्टॉक विवरण खुलासे के निर्देश को प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने के लिए सभी राज्यों के सहयोग की आवश्यकता है। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के पोर्टल पर स्टॉक विवरण तत्काल प्रस्तुत किया जाना चाहिए और प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन के स्टॉक की नवीनतम जानकारी दी जानी चाहिए। राज्यों के मुख्य सचिवों से आग्रह किया गया है कि वे नियमित रूप से चीनी के दाम एवं स्टॉक पर व्यक्तिगत रूप से नजर रखें ताकि उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर इसे प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो। इससे चीनी बाजार को स्थिर करने में सहायता मिलेगी। जिन राज्यों के मुख्य सचिवों को इस आशय का पत्र भेजा गया है उसमें आंध्र प्रदेश, आसाम, छत्तीसगढ़, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड, अंडमान निकोबार, जम्मू कश्मीर, पांडिचेरी, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, सिक्किम, पंजाब, नागालैंड, मेघालय, महाराष्ट्र, केरल, झारखंड, हरियाणा, गोवा, बिहार एवं अरुणाचल प्रदेश शामिल है। 21 सितम्बर 2023 को खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के अधीनस्थ चीनी एवं वनस्पति तेल निदेशालय द्वारा जारी किए गए आदेश में कहा गया है कि आवश्यक वस्तु अधिनियम की धारा 3 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए चीनी के सभी व्यापारियों, थोक विक्रेताओं, खुदरा कारोबारियों, बिग चेन रिटेलर्स तथा मिलर्स / प्रोसेसर्स को निर्देश दिया जाता है कि वे अपने पास मौजूद चीनी के पूर्ण स्टॉक का विवरण सरकारी पोर्टल पर उपलब्ध करवाए और फिर प्रत्येक सोमवार को इसका अपडेट भी जमा करें।

किफायती आवास परियोजनाओं के लिए साथ आए सनटेक रियल्टी और आईएफसी

नई दिल्ली:

सनटेक रियल्टी और आईएफसी ने मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में चार-छह किफायती आवास परियोजनाएं विकसित करने के वास्ते 750 करोड़ रुपए तक के निवेश के लिए एक संयुक्त मंच स्थापित किया है। विश्व बैंक का सदस्य आईएफसी उभरते बाजारों में निजी क्षेत्र पर केंद्रित सबसे बड़ा वैश्विक विकास संस्थान है। सनटेक रियल्टी ने बृहस्पतिवार को शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि उसने ''750 करोड़ रुपए तक के कुल निवेश के साथ एक संयुक्त मंच तैयार करने के लिए आईएफसी के साथ साझेदारी की है। निवेश के तहत एमएमआर में चार से छह हरित आवास परियोजनाओं में करीब 12,000 आवास इकाइयों का निर्माण किया जाएगा। आईएफसी 330 करोड़ रुपए तक का निवेश करेगा, जबकि शेष निवेश सनटेक रियल्टी द्वारा किया जाएगा। सनटेक रियल्टी के मुख्य प्रबंध निदेशक कमल खेतान ने कहा, ''हम भारत में आवास की कमी को दूर करने के अपने साझा लक्ष्य में आईएफसी के साथ हाथ मिलाकर खुश हैं।'' भारत में आईएफसी के 'कंट्री हेड' वेंडी वर्नर ने कहा, ''यह निवेश सनटेक रियल्टी जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों के साथ साझेदारी के माध्यम से किफायती तथा पर्यावरण-अनुकूल आवास का समर्थन करके अधिक समावेशी शहर बनाने की हमारी रणनीति के अनुरूप है।''

एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह में भारत का ध्वजवाहक होना गर्व की बात : हरमनप्रीत

नई दिल्ली : भारतीय पुरूष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि हांगझोउ में शनिवार से शुरू हो रहे 19वें एशियाई खेलो के उद्घाटन समारोह में देश का ध्वजवाहक होना गर्व की बात है। भारतीय ओलंपिक संघ ने बुधवार को हरमनप्रीत और ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन को 655 सदस्यीय भारतीय दल का ध्वजवाहक बनाया। अतीत में धनराज पिल्लै (1998 और 2002), ज्योति सुनीता कुल्लू (2006), गगन नारंग (2010), सरदार सिंह (2014) और नीरज चोपड़ा (2018) भारत के ध्वजवाहक रह चुके हैं। हरमनप्रीत ने कहा, 'लवलीना बोरगोहेन के साथ संयुक्त रूप से भारत का ध्वजवाहक होना मेरे लिये फख्र की बात है। यह बड़े स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका भी है। मैं भावविभोर हूं। उन्होंने कहा, 'मैं लवलीना को भी इस मौके के लिए बधाई देना चाहता हूं। मैं जिस जुनून और प्रतिबद्धता के साथ खेलता आया हूं, उसी के साथ टीम की अगुवाई करूंगा। इन खेलों में हमारे देश की एकता और विविधता की भी बानगी मिलेगी और मैं पूरे गर्व के साथ अपना ध्वज थामूंगा। तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के अहम सदस्य रहे ड्रैग फ्लिकर हरमनप्रीत ने भारत के लिए सर्वाधिक छह गोल दागे थे। हाल ही में उनकी कप्तानी में भारत ने चेन्नई में एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी जीती है।

एशियाई खेलों के लिए रवानगी से पहले भारतीय टी20 टीम अभ्यास मैच हारी

बेंगलुरु ।

एशियाई खेलों के लिए रवानगी से पहले आयोजित एक अभ्यास मैच में भारत की टी20 टीम शुक्रवार को यहां कर्नाटक से चार विकेट से हार गई। भारतीय एकादश टीम 20 ओवर में 133 रन पर सिमट गयी जिसमें मनोज भंडाजे ने चार ओवर में 15 रन देकर चार विकेट झटके जबकि वासुकी कौशिक और शुभांग हेगडे को तीन तीन विकेट मिले। जवाब में मनीष पांडे ने नाबाद 52 रन (40 गेंद में) की पारी खेली जबकि सलामी बल्लेबाज एलआर चेतन (29 रन), मयंक अग्रवाल (19 रन) और अभिनव मनोहर (नाबाद 17 रन) ने भी कर्नाटक को पांच गेंद रहते जीत दिलाने में योगदान दिया। आवेश खान, रवि बिश्नोई और आर साई किशोर ने भारत की एशियाड टी20 टीम के लिए एक एक विकेट लिया। सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और प्रभसिमरन सिंह ने हालांकि भारतीय टीम के कर्नाटक के गेंदबाजों के आगे घुटने टेकने से पहले अच्छी शुरुआत दिलाई। प्रभसिमरन ने 31 गेंद में सात चौके और एक छक्के से 49 रन जबकि जायसवाल ने 17 गेंद में सात चौकों से 31 रन बनाये। इसके बाद कर्नाटक के गेंदबाजों ने शीर्ष और मध्यक्रम को झकझोर दिया जिससे राहुल त्रिपाठी, जितेश शर्मा, रिंकू सिंह और शिवम दूबे दोहरे अंक तक भी नहीं पहुंच सके। कौशिक ने तीन विकेट लेकर भारतीय टीम को समेट दिया। एशियाई खेलों के लिए जाने वाली भारतीय टीम कप्तान रूतुराज गायकवाड के बिना खेल रही थी जिन्हें मोहाली में आस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले वनडे के लिए अंतिम एकादश में चुना गया है। भारतीय पुरुष टीम पहली बार एशियाई खेलों में हिस्सा लेगी जिसमें मुकाबले 28 सितंबर से आठ अक्टूबर तक चलेंगे। भारतीय महिला टीम पहले ही एशियाड के सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर चुकी है।

क्रिकेट विश्व कप : द्रविड़ ने अश्विन को बताया टीम इण्डिया रणनीति का हिस्सा

मोहाली ।

मोहाली में होने वाले पहले वनडे से पहले भारत के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने कहा है कि अगर विश्व कप के लिए जाने वाले किसी भी खिलाड़ी को चोट की चिंता होती है तो टीम प्रबंधन हमेशा आर अश्विन को ध्यान में रखता है। ऑफ स्पिनर करीब 18 महीने तक वनडे नहीं खेले हैं लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज के लिए उन्हें वनडे टीम में चुना गया है। उन्होंने कहा कि यह वरिष्ठ ऑफ स्पिनर के लिए किसी प्रकार का परीक्षण नहीं है। अश्विन भले ही वनडे विश्व कप 2023 के लिए भारत की संभावित टीम में नहीं है लेकिन एशिया कप में अक्षर पटेल को लगी चोट के बाद उनका नाम फिर से ऊपर आ गया। अश्विन ने 2018 से अब तक केवल 2 वनडे खेले हैं, लेकिन द्रविड़ का कहना है कि विश्व कप से पहले चोट की चिंता होने पर टीम प्रबंधन ने हमेशा एक ऑफ स्पिनर लाने पर विचार किया था। अक्षर को एशिया कप 2023 में बांग्लादेश के खिलाफ सुपर 4 मैच के दौरान चोट लगी थी। अक्षर ने श्रीलंका के खिलाफ फाइनल नहीं खेल पाए थे। उनकी जगह टीम में वाशिंगटन सुंदर को रखा गया था। हालांकि इस मैच में सुंदर को क्षेत्ररक्षण, गेंदबाजी या बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला क्योंकि मोहम्मद सिराज के श्रीलंका की टीम को 50 रन पर ढेर कर दिया था। द्रविड़ ने गुरुवार को मोहाली में कहा कि हम अश्विन को विश्व कप से पहले जरूरत पड़ने पर 2-3 मैच खेलने का अवसर देंगे। द्रविड़ ने कहा कि यह एक अच्छी बात है। यदि हमारे पास अच्छा खिलाड़ी है, तो हम उसे किसी भी चरण में बुला सकते हैं। यह उनके लिए भी खुद को परखने का एक अच्छा मौका है क्योंकि वह लंबे अंतराल के बाद वनडे टीम में वापसी कर रहे हैं। मैं यह नहीं कहूंगा कि यह उनके लिए एक ट्रायल जैसा है। हमें उनकी खूबियां पता है। वैसे भी ऑफ स्पिनर लगातार कप्तान रोहित शर्मा के संपर्क में है। अश्विन ने तब सुर्खियां बटोरीं जब उन्होंने एशिया कप के दौरान सफेद गेंद से प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के कोच वीवीएस लक्ष्मण के साथ संपर्क किया। अटकलें लगाई जा रही थीं कि एनसीए में अश्विन का कार्यकाल उनकी वनडे वापसी से जुड़ा है और यह सब तब समझ में आया जब वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे टीम में लौटे।

एशियाई खेल : भारतीय पुरुष टेबल टेनिस टीम की जीत के साथ शुरुआत

हांगझोउ । भारतीय पुरुष टेबल टेनिस टीम ने शुक्रवार को यहां यमन पर 3-0 से आसान जीत दर्ज करके एशियाई खेलों में अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। अनुभवी शरथ कमल, जी साथियान और हरमीत देसाई को सीधे गेम में जीत दर्ज करने के लिए किसी तरह की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। साथियान ने अली उमर अहमद को 14 मिनट में 11-3, 11-2, 11-6 से हराकर शानदार शुरुआत की। एशियाई खेलों में आखिरी बार खेल रहे 41 वर्षीय शरथ ने इसके बाद इब्राहिम अब्दुलहकीम मोहम्मद गुब्रान को 11-3, 11-4, 11-6 से हराकर भारत की बढ़त दोगुनी कर दी। देश के शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी हरमीत ने मगद अहमद अली अल्धुभानी को 11-1, 11-1, 11-7 से हराकर मुकाबला भारत के नाम किया। भारतीय पुरुष टीम ग्रुप एफ के अपने अगले मुकाबले में सिंगापुर का सामना करेगी। महिला टीम भी अपने अभियान की शुरुआत सिंगापुर के खिलाफ करेगी।

20 साल बाद क्रिकेट से संन्यास लेंगे इंगलैंड के एलिस्टर कुक

-350 मैचों में 74 शतक और 125 अर्धशतकों की मदद से 26615 रन बनाने वाले बल्लेबाज

नई दिल्ली ।

2023 काउंटी सीजन के समापन पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान और महान बल्लेबाज एलिस्टर कुक क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने के लिए तैयार हैं। कुक ने 2018 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। हालांकि वह एसेक्स के लिए काउंटी क्रिकेट खेलते रहे। उन्होंने इसी क्लब से साल 2003 में अपने प्रथम श्रेणी करियर की शुरुआत की थी। 38 वर्षीय कुक ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में अब तक 350 मैचों में 74 शतक और 125 अर्धशतकों की मदद से 26615 रन बनाए हैं। उन्होंने मौजूदा काउंटी सीज़न में 23 पारियों में 36.72 की औसत से एक शतक और तीन अर्धशतक के साथ 808 रन बनाए हैं। रिपोर्ट के अनुसार- इंग्लैंड के पूर्व कप्तान अगले हफ्ते काउंटी सीजन के अंत में निश्चित रूप से सेवानिवृत्त हो जाएंगे, उन्हें अभी भी उम्मीद है कि वह एसेक्स को एक और चैम्पियनशिप खिताब दिला देंगे। कुक ने रिटायरमैंट के बाद अपने परिवार के साथ फैमिली फार्म में अधिक समय बिताने और कॉमेंट्री करने की योजना बनाई है। एलिस्टर कुक का अंतरराष्ट्रीय करियर शानदार रहा है।

वह टेस्ट क्रिकेट में 33 शतकों और 57 अर्धशतकों की मदद से 45.35 की औसत से 12472 रन बनाकर इंग्लैंड के सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। वह टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में पांचवें सबसे ज्यादा रन बनाने वाले और सलामी बल्लेबाजों में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। केवल सुनील गावस्कर ने टेस्ट ओपनर के रूप में कुक (31) से अधिक शतक (33) बनाए हैं।

संक्षिप्त समाचार

अरुणाचल के एथलीटों को वीजा न मिलने पर खेल मंत्री का सख्त रूख, एशियाई खेलों के लिए चीन दौरा रद्द किया

नई दिल्ली: खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने अरुणाचल प्रदेश के तीन वुशू एथलीटों को एशियाई खेलों में भाग लेने के लिए नियमित चीनी वीजा से इनकार करने के बाद एशियाई खेलों के लिए अपनी चीन यात्रा रद्द कर दी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि भारत अपने हितों की रक्षा के लिए कदम उठाने का अधिकार सुरक्षित रखता है। बागची ने कहा, चीनी कार्रवाई के खिलाफ हमारे विरोध के प्रतीक के रूप में भारत के सूचना एवं प्रसारण और युवा मामले और खेल मंत्री ने खेलों के लिए चीन की अपनी निर्धारित यात्रा रद्द कर दी है। भारत सरकार हमारे हितों की रक्षा के लिए उचित उपाय करने का अधिकार सुरक्षित रखती है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि भारत अपने खिलाड़ियों के साथ चीनी अधिकारियों के व्यवहार को खारिज करता है। उन्होंने कहा, भारत सरकार को पता चला है कि चीनी अधिकारियों ने लक्षित और पूर्व-निर्धारित तरीके से अरुणाचल प्रदेश राज्य के कुछ भारतीय खिलाड़ियों को हांगझू, चीन में 19वें एशियाई खेलों में मान्यता और प्रवेश से वंचित करके उनके साथ भेदभाव किया है। हमारी दीर्घकालिक और सुसंगत स्थिति के अनुरूप भारत निवास या जातीयता के आधार पर भारतीय नागरिकों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार को दृढ़ता से खारिज करता है। अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा था, है और हमेशा रहेगा। अरुणाचल प्रदेश के दो वुशु खिलाड़ी ओनिलु तेगा और मेपुंग लाम्गु हांग्जो एशियाई खेल 2023 आयोजन समिति द्वारा भाग लेने की मंजूरी दी गई थी, वे अपने मान्यता कार्ड डाउनलोड करने में असमर्थ थे - जो चीन में प्रवेश के लिए वीजा के रूप में कार्य करते हैं। तीसरी एथलीट न्येमान वांगसु अपनी मान्यता डाउनलोड करने में कामयाब रहीं, को सूचित किया गया कि उन्हें हांगकांग से आगे यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

विश्व कप टीम में शा मिल सूर्यकुमार में खेल का रुख बदलने की क्षमता है : द्रविड़

मोहाली । भारत के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने गुरुवार को कहा कि विश्व कप के लिए चुनी गई टीम में सूर्यकुमार यादव को शामिल किया गया हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले वनडे की पूर्व संध्या पर द्रविड़ ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि उन्हें 27 तारीख के बारे में चिंता करने की जरूरत है। विश्व कप के लिए चये नित टीम में सूर्यकुमार शो मिल हैं क्योंकि उनमें खेल का रुख बदलने के गुण और क्षमता है। उन्होंने कहा कि सूर्यकुमार आईसीसी रैंकिंग में नंबर एक टी20ई बल्लेबाज हैं, लेकिन उन्होंने वनडे प्रारूप में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। उन्होंने 25 मैचों में 24.40 की औसत के साथ केवल 2 अर्द्धशतक बनाए हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कल होने वाले पहले वनडे के लिए सूर्यकुमार को शामिल करने का भी संकेत दिया, जबकि विराट कोहली, रोहित शर्मा और हार्दिक पांड्या को पहले दो मैचों के लिए आराम दिया गया है। सूर्यकुमार ऐसे` खिलाड़ी है जो आस्ट्रेलिया के खिलाफ सभी तीन मैच खेलेगा। रविचंद्रन अश्विन की क्षमताओं पर भरोसा जताते हुए द्रविड़ ने कहा` कि उन्होंने जनवरी 2022 के बाद से बहुत अधिक वनडे नहीं खेले हैं, लेकिन उनके पास इससे निपटने की क्षमता है, उनके पास खासा अनुभव है। अश्विन के अनुभव वाले किसी खिलाड़ी का वापस आना हमारे लिए हमेशा अच्छा होता है। उनके पास आठवें नंबर पर बल्ले से योगदान देने में सक्षम होने की क्षमता है। वह ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बारे में हम हमेशा सोचते हैं कि कुछ चोटें या चोट लगने की स्थिति में कहां जाना चाहिए। वह हमेशा हमारी योजनाओं का हिस्सा थे।

वर्ल्ड कप 2023 के लिए पाकिस्तान की टीम घोषित, चोटिल नसीम शाह हुए बाहर

नई दिल्ली ।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने वनडे वर्ल्ड कप 2023 के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। पूर्व कप्तान और चीफ चयनकर्ता इंजमाम उल ने टीम घोषित की। तेज गेंदबाज नसीम शाह को टीम में जगह नहीं मिली है। एशिया कप 2023 के दौरान चोटिल हो गए थे। नसीम की जगह हसन अली को वर्ल्ड कप टीम में जगह दी गई है। वर्ल्ड कप में पाकिस्तान को 29 सितंबर को वॉर्मअप मैच में न्यूजीलैंड से भिड़ना है। टीम वर्ल्ड कप के अपने पहले मुकाबले में 6 अक्टूबर को हैदराबाद में नीदरलैंड्स से भिड़ेगी। भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 14 अक्टूबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होना है। एशिया कप में उतरने वाले 2 खिलाड़ी वर्ल्ड कप टीम से बाहर किया गया हैं। टीम घोषित कर मुख्य चयनकर्ता इंजमाम उल हक ने कहा कि हमारे प्लेयर्स ने पिछले कुछ दिनों में अधिक मैच खेला। टीम में उन खिलाड़ियों को ही जगह दी है, जो पिछले एक साल से खेल रहे हैं। एशिया कप में हमने सिर्फ 2 खराब मैच खेल। इसके बाद सभी को टीम से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मिडिल ओवर्स में हमारे गेंदबाज विकेट नहीं ले रहे। यह हमारे लिए चिंता की बात है। टीम मैनेजमेंट इस ओर ध्यान दे रहा है। इमाद वसीम को लेकर उन्होंने कहा कि किसी भी खिलाड़ी के लिए दरवाजे बंद नहीं हुए है। किसी भी खिलाड़ी के लिए टीम में जगह बनाने के लिए घरेलू टीम में खेलना जरूरी है। उस ही वरीयता दी जाएगी।

वर्ल्ड कप 2023 के लिए पाकिस्तान की टीम :

बाबर आजम (कप्तान), शादाब खान (उपकप्तान), फखर जमां, इमाम उल हक, अब्दुल्लाह शफीक, मोहम्मद रिजवान, सलमान आगा, सऊद शकील, इफ्तिखार अहमद, मोहम्मद नवाज, स्मां मीर, हारिस रऊफ, मोहम्मद वसीम जूनियर, हसन अली और शाहीन अफरीदी शामिल हैं।

रिजर्व:

मोहम्मद हारिस, जमान खान, अबरार अहमद।

खेल प्रशंसकों के दिमाग में सवाल, क्या राहुल की मौजूदगी में ईशान को मिलेगा मौका

नई दिल्ली । आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। भारत में 5 अक्टूबर से शुरू हो रहे क्रिकेट के महाकुंभ में खिलाड़ियों को लेकर चर्चा तेज है। टीम इंडिया में किस प्लेयर को जगह मिलेगीज्कौन सी एकादश मैदान में उतरेगी। इसपर निगाहें टिकी हुई हैं।रांची में भी ईशान किशन के खेलने को लेकर दीवानगी फैंस के सिर चढ़कर बोल रही है। टीम इंडिया में ईशान के साथ राहुल की चुनौती पर चर्चा काफी समय से हो रही है। चर्चा इस लेकर ज्यादा है कि क्या ईशान को केएल राहुल की मौजूदगी में तरजीह मिलेगी। युवा विकेटकीपर बल्लेबाज किशन के कोच अरुण विद्यार्थी अपने शिष्य के विश्व कप में खेलने को लेकर बेहद आशान्वित हैं। कोच ने बताया कि ईशान अपने खेल और विविधता के कारण केएल राहुल पर थोड़ा भारी पड़ते हैं। उन्होंने बताया कि ईशान लेफ्ट हैंड बल्लेबाज हैं, जो कई गेंद को नेचुरल तरीके से खेलने में सक्षम हैं। उन्होंने बताया कि जरूरत पड़ने पर वह ओपनिंग में तेज शुरुआत देने के साथ-साथ चौथे और पांचवे नंबर पर बल्लेबाजी करने में भी सक्षम हैं। कोच अरुण विद्यार्थी मानते हैं कि ईशान विकेटकीपर बल्लेबाज हैं, जबकि राहुल बल्लेबाजी के साथ विकेट कीपर करते हैं। नाजुक मौकों पर ईशान ने विकेट पर टिककर खेलने की अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की है। उन्होंने ईशान की बतौर ओपनर डबल सेंचुरी और पाकिस्तान के खिलाफ खेली गई सूझबूझ वाली पारी का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि ईशान में लगातार सीखने की ललक है। वे लगातार टीम के कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली और दूसरे सीनियर प्लेयर से टिप्स लेकर अपने खेल को सुधारने पर फोकस करते हैं। कोच ने बताया कि ईशान की हाइट थोड़ी कम होने के कारण कुछ गेंदें उनकी पसंदीदा बन जाती हैं। उन्होंने बताया कि शॉट ऑफ लेंथ गेंदों को उठाकर मारना उन्हें पंसद है। वह कमर के ऊपर की गेंदों को बैकफुट पर जाकर खेलना पसंद करते हैं। हालांकि उन्होंने बताया कि ईशान वर्ल्ड कप में चौथे और पांचवें नबर की बल्लेबाजी में ज्यादा कारगर साबित हो सकते हैं। क्योंकि वह तेज गेंदबाजी के साथ साथ स्पिन भी लाजवाब खेलते हैं। रांची की सैटेलाइट कॉलोनी में रहने वाले ईशान को आज भी वहां के लोग उनके खेल को काफी याद करते हैं। क्योंकि वहां के लोकल मैदान में ही ईशान चौके छक्के उड़ाते नजर आते थे। ईशान का परिवार पटना के आशियाना नगर में रहता है।

स्पैनिश शतरंज लीग : प्रज्ञानन्दा नें खेला दूसरा ड्रॉ

लिनारेस , स्पेन (निकलेश जैन)

भारत के नंबर 3 शतरंज खिलाड़ी ग्रांड मास्टर प्रज्ञानन्दा नें स्पैनिश शतरंज लीग में पहले दो राउंड में अपनी टीम सीए सोलवाय से खेलते हुए अपने दोनों मुक़ाबले जीतने के बाद लगातार दो मुक़ाबले ड्रॉ खेले है । प्रज्ञानन्दा नें तीसरे राउंड में रूस के अलेकसींकों किरिल और फ्रांस के एटीने बकरोट के साथ अपनी बाजी ड्रॉ खेली है , इन दो ड्रॉ के बाद उन्हे रेटिंग में मामूली 2 अंको का नुकसान जरूर हुआ पर वह 2734 अंको के साथ अभी भी विश्व के 16वें नंबर के खिलाड़ी बने हुए है । 29 सितंबर से एशियन गेम्स मे प्रज्ञानन्दा टीम चैंपियनशिप में भारत की टीम से खेलते हुए नजर आएंगे ।

राहुल द्रविड़ ने किया कोहली, रोहित, श्रेयस का बचाव

मोहाली ।

भारतीय क्रिकेट टीम का 'थिंक टैंक हाल के वर्षों में और अधिक हरफनमौलाओं को मौका दे रहा है, जिसका लेना देना शीर्ष क्रम की मौजूदा पीढ़ी का गेंदबाजी नहीं करना है जबकि बीते समय में उनके सीनियर क्रिकेटर ऐसा किया करते थे। भारतीय टीम की अक्षर पटेल या वाशिंगटन सुंदर को मैदान पर उतारने की बेताबी दो चीजों पर आधारित है कि बल्लेबाज इतनी गेंदबाजी नहीं कर रहे हैं और पुछल्ले बल्लेबाज बल्ले से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। तब क्या बदलाव हुआ है? द्रविड़ ने अपनी टीम में विशेषकर विराट कोहली, रोहित शर्मा, श्रेयस अय्यर और सूर्यकुमार यादव (जो गेंदबाजी नहीं करते) के बचाव में कहा कि मुझे लगता है कि ऐसा नियम बदलने की वजह से हो सकता है। अचानक से ही आप सर्कल के अंदर 4 क्षेत्ररक्षकों से 5 क्षेत्ररक्षकों को रखने लगे। राहुल को लगाता हैं कि इससे कामचलाऊ गेंदबाज की मध्य के चरण में गेंदबाजी करने की काबिलियत में तेजी से बदलाव हुआ है। सूर्यकुमार को कुछ वर्ष पहले मुंबई इंडियंस के मैच के दौरान संदिग्ध गेंदबाजी एक्शन के लिए बुलाया गया था जिसके बाद से उन्होंने कभी गेंदबाजी नहीं की। सूर्यकुमार से पहले शिखर धवन कभी कभार ऑफ स्पिन किया करते थे लेकिन घरेलू क्रिकेट में उन्हें संदिग्ध एक्शन के लिए बुलाया गया और इसके बाद उन्होंने गेंदबाजी बिलकुल बंद ही कर दी। वहीं, अगर बीते समय की बात करें तब सचिन तेंदुलकर इनस्विंगर, आउटस्विंगर, लेग ब्रेक, ऑफ ब्रेक किया करते थे जिससे उन्होंने 154 वनडे विकेट झटके। सौरव गांगुली ने भी 100 विकेट झटके हैं जबकि युवराज सिंह की गेंदबाजी ने भारत को 2011 विश्व कप जिताने में अहम भूमिका अदा की जिन्होंने 111 विकेट हासिल किए। ये सभी विशेषज्ञ बल्लेबाज शीर्ष 5 बल्लेबाजी क्रम में शामिल थे। वीरेंद्र सहवाग ने 96 विकेट झटके और सुरेश रैना ने 36 विकेट हासिल किए। द्रविड़ ने कहा कि अगर आप याद करो और इन नामों (सचिन, सौरव, सहवाग, युवराज, रैना) की गेंदबाजी का जिक्र इस चरण में करो तो इनमें से ज्यादातर खिलाड़ियों ने तब गेंदबाजी शुरु की जब सर्कल में केवल 4 क्षेत्ररक्षक हुआ करते थे। उन्होंने कहा कि इस परिस्थिति (सर्कल के अंदर 5 क्षेत्ररक्षक) में आप कामचलाऊ गेंदबाज गंवा सकते हो और ऐसा हमारे साथ ही नहीं हुआ बल्कि काफी टीमों ने ऐसा किया।

जोस बटलर वर्ल्ड कप टीम से बाहर, खेल प्रंशसकों को हो रही हैरानी

नई दिल्ली । वर्ल्ड कप 2023 की शुरुआत 5 अक्टूबर से होने वाली है। 2-3 टीमों को छोड़कर लगभग सभी टीमों ने अपने एकादश का ऐलान कर दिया है। इंग्लैंड की टीम ने कुछ दिन पहले ही अपनी टीम की घोषणा की थी। लेकिन लिस्ट में इंग्लैंड के लिए वनडे में 12 शतक जड़ने वाले धाकड़ ओपनर खिलाड़ी का नाम नहीं था। जोस बटलर ने कहा, यह मेरी जिम्मेवारी है कि मैं यह न्यूज आपको दूं। वह (जेसन रॉय) मेरा बहुत अच्छा साथी है। ये कॉल मेरे लिए काफी टफ था। जेसन हमारी टीम में टॉप आर्डर में बैटिंग करता है।बटलर ने कहा, हमें कई बार अपने बेहतरीन खिलाड़ियों को स्क्वॉड से बाहर करना पड़ता है। ये खेल का गंदा स्वभाव है। 15 खिलाड़ियों के अलावा कई सारे खिलाड़ी हैं, जो टीम में जगह डिजर्व करते थे लेकिन उन्हें मौका नहीं मिला। जब आपके पास कई सारे अच्छे खिलाड़ी होते हैं, तब आपको सेलेक्शन कमिटी के साथ मिलकर चयन करना थोड़ा मुश्किल होता है।बता दें कि जेसन रॉय इंग्लैंड के बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक हैं। वह अपनी टीम के लिए अब तक वनडे में 12 शतक जड़ चुके हैं। उन्होंने अब तक 116 मैचों में कुल 4271 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका औसत 40 के आस पास का रहा है। साल 2019 के वर्ल्ड कप में उन्होंने 8 मैचों में 400 से भी ज्यादा रन बनाए थे। इसके बावजूद उन्हें वर्ल्ड कप टीम में जगह नहीं मिलना थोड़ा आश्चर्यजनक हैं। विश्व कप के लिए इंग्लैंड की टीम- जोस बटलर (कप्तान), मोइन अली, गस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो (विकेटकीपर), हैरी ब्रूक, सैम कुरेन, लियाम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, आदिल राशिद, जो रूट, बेन स्टोक्स, रीस टॉपले, डेविड विली, मार्क वुड और क्रिस वोक्स शामिल है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

धान के भारी खेत जिसमें नमी अधिक समय तक संचित रहती है वहां भी उतेरा पद्धति से अलसी की खेती की जा सकती है अलसी के अच्छे अंकुरण के लिये खेत को अच्छा भुरभुरा तैयार करना चाहिये। खेत को 2-3 बार आड़ी एवं खड़ी जुताई करके उसमें पाटा लगाकर नमी को संरक्षित करना चाहिये।

धान के खेत में उत्तम पैदावार देती है

'अलसी'

जलवायु

अलसी की फसल को ठंडे व शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है इसके उचित अंकुरण के लिए 25-30 डिग्री सेल्सियस सेंटीग्रेट तथा बीज बनते समय 15-20 सेल्सियस सेंटीग्रेट तापमान होना चाहिये।

भूमि की तैयारी

अलसी की फसल के लिए काली, भारी एवं दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है धान के भारी खेत जिसमें नमी अधिक समय तक संचित रहती है वहां भी उतेरा पद्धति से अलसी की खेती की जा सकती है अलसी के अच्छे अंकुरण के लिये खेत को अच्छा भुरभुरा तैयार करना चाहिये। खेत को 2-3 बार आड़ी एवं खड़ी जुताई करके उसमें पाटा लगाकर नमी को संरक्षित करना चाहिये। धान के खेतों में समय-समय पर खरपतवार निकालकर खेत को नींदा रहित करते हुये साफ रखना चाहिये।

फसल प्रणाली

अलसी को मुख्य फसल के रूप में लगाने के बजाय मिलवा या अंतरवर्तीय फसल के रूप में लगाने से अधिक आय संभव हैं। अंतरवर्तीय फसल पद्धति के अंतर्गत अलसी के साथ 3:1 के अनुपात में चना, सरसों, मसूर को भी लगाकर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

उन्नत किस्में

जवाहर 16, जेएलएस 9,जवाहर 23, पूसा 2

बीजोपचार

थारयम या कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें व बीजोपचार के बाद राइजोबियम व पीएसबी कल्चर से 5-5 ग्राम/कि. बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें।

बीज की गहराई

अलसी के बीज को नमी के आधार पर भूमि में 3 सेंमी की गहराई पर बुवाई करें. यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो उथली बुवाई लाभदायक होती है।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की खाद उपलब्ध होने पर अंतिम व बखरनी के समय 4-5 टन प्रति हेक्टेयर खेत में मिला दें। असिंचित अवस्था में 65:125 किलोग्राम, यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश प्रति हेक्टेयर सम्पूर्ण खाद बुवाई के समय में ही खेत में डालें। सिंचित अवस्था में 174:125:30:0 किलो ग्राम यूरिया, सिंगल सुपर प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें। नत्रजन की 2/3 मात्रा व स्फुर, पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें तथा नत्रजन की शेष 1/3 मात्रा को पहली सिंचाई के समय दें एवं उतेरा पद्धति में 20 किलो नत्रजन अलसी के फसल में दें।

खरपतवार नियंत्रण

अलसी की फसल को बुवाई से 30-35 दिन तक खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिये। फसलों को नींदा रहित रखने के लिए बुवाई के 15-20 दिन बाद पहली निंदाई-गुड़ाई करनी चाहिये या रसायनिक खरपतवार नियंत्रण के अंतर्गत पेंडीमिथालीन खरपतवार -नाशक की 3.33 लीटर मात्रा को 600-700 ली. पानी में घोल बनाकर बीज के अंकुरण पूर्व उपयोग करें।

सिंचाई

अलसी की फसल में सिंचाई करने से उत्पादन में वृद्धि होती है अतः सिंचाई उपलब्ध होने पर पहली सिंचाई शाखा बनते समय व दूसरी सिंचाई कली बनने की अवस्था में करने से उत्पादन में वृद्धि होती है।

मसूर

की उन्नत खेती

भूमि

मसूर सभी प्रकार की भूमि में उगाई जा सकती है। किंतु सफल खेती के लिए दोमट और भारी भूमि इसके लिए अधिक उपयुक्त है। भूमि का पीएच मान 6.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

भूमि की तैयारी इस प्रकार करना चाहिए कि मिट्टी भुरभुरी तथा खरपतवार से रहित हो जाये। भारी भूमि में एक गहरी जुताई के बाद दो हल्की जुताई हो या देशी हल से करना चाहिए तथा प्रत्येक जुताई के बाद पाटा अवश्य लगाना चाहिए। जिससे नमी संरक्षित रहे।

बीज की मात्रा एवं बोने की विधि

सामान्यत: 35-40 किग्रा/हे. बीज बोना चाहिए। समय पर बोनी के लिए कतार से कतार की दूरी 30 सेमी तथा देरी से बोनी करने पर 20-25 सेमी. पर कतारों में बीज की 4-5 सेमी की गहराई पर सीडड्रिल से बोना चाहिए। थाईरम 2 ग्राम, 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम दवा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करके बोना चाहिए। इसके बाद बीज को 10 ग्राम राइजोबियम तथा 10 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित कर बोनी करें।

बुवाई समय

असिंचित क्षेत्रों में नमी उपलब्ध रहने पर अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक बोनी करें। इसके बाद बोनी करने पर पकने की अवस्था पर तापक्रम बढ़ने में दाना छोटा व उपज में कमी आती है।

उन्नत जातियां

के 75 (मल्लिका), जे.एल. - 1, एल. - 4076, जे.एल. 3, आईपीएल - 18, एल. 9-2

खाद एवं उर्वरक

असिंचित अवस्था में 15 :30 :10 कि.ग्रा./हे. यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा सिंचित खेती करने पर 43 :350 :33 किग्रा/हे. नत्रजन स्फुर एवं पोटाश बुवाई के समय खेत में डालना चाहिए।

सिंचाई

सामान्यत : बारानी खेती में ही मसूर की फसल को लिया जाता है। परन्तु यदि शीतकाल मे वर्षा का अभाव हो तो एक सिंचाई करने पर उपज में वृद्धि होती है।

फसल चक्र

धान-मसूर, सोयाबीन-मसूर, उड़द-मसूर, ज्वार-मसूर, बाजरा-मसूर

अंतरवर्तीय खेती : मसूर-सरसों (4:1), मसूर-जौ (4:2)

कटाई एवं गहाई

फसल पकने की अवस्था में पीली पड़कर सूखने लगती है। फसल की कटाई कर खलिहान में बैलों या ट्रेलर से गहाई कर पंखे से सफाई करना चाहिए तथा बीज को सुखाकर भंडारित करना चाहिये।

मुर्गियों की देखभाल

उपरोक्त इन लक्षणों के दिखाई देने पर ये उपाय करें

- बाड़े के चारों ओर छत से सटकर कम से कम दस फीट चौड़ा हरे रंग के जालीदार कपड़े का मंडप लगवाये जिससे धूप तथा गर्मी की तीव्रता कम हो जायें.
- बाड़े के छत को ऊपर सफेद पेंट लगवाये या फिर ऊपर घांसफूस डलवायें. इससे बाड़े के भीतर का तापक्रम 4 डिग्री सें. से कम होता है.
- बाड़े के चारों ओर ठंडे जल का छिड़काव करें.
- बाड़े की खुली बगलों पर टाट/बोरियों के पतले पर्दे लगवाकर उस पर छिद्रधारी पाईप द्वारा या अन्य तरीके से पानी का छिड़काव करें. इससे बाड़े के भीतर का तापक्रम काफी हद तक कम हो जाता है.
- अगर संभव है तो बाड़े में धीरे-धीरे घूमने वाले पंखे लगायें तथा फव्वारे द्वारा बाड़े में पानी की बारीक बूंदों में बौछार करें. यह बाडे के भीतर का तापक्रम कम करने का बेहतरीन तरीका हैं.
- बाड़े के इर्दगिर्द घने छायादार वृक्ष पहले ही लगायें तथा मुर्गी फार्म की बाड हरे घने पत्तेदार वनस्पति जैसे सुबबूल, मेहंदी या वर्ष के गर्मी के मौसम में जो भी स्थानिक वनस्पति हरी भरी रहती हैं वह लगवायें. इससे गर्म हवाओं के थपेड़े कम आते हैं. और मुर्गी फार्म का वातावरण ज्यादा गर्म नहीं होता.

कैसे पालें नवजात बछड़े

- **व्यवस्था** : नये जन्मे बछड़े का स्वास्थ्य तथा जीवन निर्भर करता है. बछड़े को पालने की व्यवस्था की परिकल्पना पूर्णत : बन्द बसेरों (बार्न) से लेकर कम से कम आश्रय तक होती है। बछड़े के तबेले का वातावरण इस तरह होना चाहिए कि बछड़े को कम से कम तनाव हो, फर्श सूखा तथा साफ हो. गर्मी, ठण्ड, हवा और बारिश से सुरक्षा आवश्यक है. हमारा प्रबंधन ऐसा हो कि पशु को पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो जिससे कि वह सुख से रहे तथा पर्याप्त वायु संचार हो.
- **बछड़ों का बाड़ा** : अलग बाड़ा बछड़ों को अलग रखने में मदद करता है जिससे संक्रामक बीमारियों को फैलने से रोका जा सकता है तथा हम आसानी से बछड़े के आचरण, भोजन का उपभोग, मल तथा मूत्र त्याग आदि सभी का निरीक्षण कर सकते हैं.
- **झोपड़ी** : अलग झोपड़ी जो कि लगभग 4×8 फिट की लकड़ी की बनी झोपड़ियों में बछड़ों को पाल सकते हैं. थोड़ी छोटी पृथकझोपड़ियों में बछड़ों को दो से तीन करके पाल सकते हैं. बाड़ों की तुलना में झोपड़ियों में ज्यादा मेहनत लगती है लेकिन झोपड़ियों में बिना दूध दोहे बछड़ों को पूर्णत : अलग करने में मददगार होते हैं. झोपड़ियां आसानी से घुमायी और परिवर्तित की जा सकती हैं ताकि हम सूर्य के प्रकाश, तापमान व वायु के प्रवाह को आसानी से व्यवस्थित कर सकें. झोपड़ियों को आसानी से साफ रख सकते हैं. फाइबर ग्लास व पॉलीथिन की झोपड़ियां, लकड़ी की झोपड़ियों व धातु के बाड़ों की तुलना में आसानी से बनाई जा सकती है लेकिन सूर्य के तापमान को कम करने के लिए यह आवश्यक है कि यह अपारदर्शी हो.
- **बन्द मकान** : मकान जिसमें बंद व अलग बाड़ा हो बन्द मकान कहलाता है. बन्द मकान में सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु पर्याप्त वायु संचार होता है. वातावरणीय रूप से नियंत्रित बंद मकान बनाने व रख-रखाव में मंहगे होते हैं.

यह भी रखें ध्यान

- अंडा उत्पादक मुर्गियों को पीने हेतु ठंडा जल प्रदान करें. पानी की टंकियों को सफेद रंग लगवाये या उनको बोरियाँ लपेटकर तथा उन पर पानी छिड़ककर गीला रखें. बड़े मटके या नाँद में एक दिन पहले शाम को पानी भरकर रखें तथा दूसरे दिन ठंडा जल गर्मियों के वक्त थोड़ा-थोड़ा उपलब्ध करवायें.
- पीने के पानी में इलेक्ट्रोलाईट पाउडर घोलकर प्रवाहित करें ताकि मुर्गियों को वह उपलब्ध हो.
- पीने के पानी में विटामिन 'सी' एक हजार मुर्गियों को दस ग्राम इस अनुपात में डालें.
- अगर सघन बिछाली प्रणाली/डीप लीटर (यानि भूसे पर मुर्गियां रखी हैं. तो भूसे को सबेरे और शाम को ही उलट-पुलट करें.
- मुर्गियों के दाने/मॅश पर पानी हल्का सा डालें ताकि धूल ज्यादा ना उठें.
- मुर्गियों के दाने में प्रोटीन की मात्रा बढ़ायें. ताकि उनके शरीर भार में कमी ना आये.
- बाड़े के आसपास घांसफूस के लॉन (क्यारियाँ) लगवाये इससे सूरज की किरणों से तपती धरती से निकलने वाले किरण कम सान्द्र होते हैं. और आसपास का वातावरण ठंडा रहता हैं. इन क्यारियों पर पानी छिड़ककर उन्हें ठंडा रखें.
- मुर्गियों को सीप चूरा खिलायें ताकि कैल्शियम की पूर्ति होकर अंडों के छिलके पतले ना बनें.
- बाड़े में मुर्गियाँ इतनी ही रखें जिससे बाड़े में वे आराम से रह सके और कतई भीड़ न हो.
- मुर्गियां बाड़े में तितर-बितर होकर दूर-दूर खड़ी रहती हैं ये सुस्त दिखाई देती हैं.
- कुछ मुर्गियां शरीर की गर्मी कम करने हेतु पंख फैलाकर रखती हैं.
- कुछ मुर्गियाँ लगातार चोंच खोलती हैं तथा बंद करती हैं और
- कुछ मुर्गियों को सांस लेने में कठिनाई होती हैं.
- कुछ मुर्गियां गर्मी का असर कम करने हेतु अपने पिछले हिस्से पर चोंच मारकर पंख तोड़ने की कोशिश करती हैं.
- ज्यादातर मुर्गियाँ बारबार पानी पीने हेतु पानी के बर्तनों के पास ही दिखाई देती हैं.
- ज्यादा गर्मी होने पर कुछ मुर्गियाँ बेहोश भी हो सकती हैं.
- उनके शरीर भार में कमी आती हैं और वे कमजोर हो जाती हैं.
- उनके अंडों का वजन तथा आकार कम हो जाता हैं तथा अंडों के छिलके पतले हो जाते हैं.

बाइडेन ने यूक्रेन के लिए की 325 मिलियन डॉलर की सैन्य सहायता की घोषणा

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूक्रेन के लिए 325 मिलियन डॉलर के नए सैन्य सहायता पैकेज की घोषणा की है, जिसमें एयर डिफेंस पर ज?यादा फोकस रखा गया है।बाइडेन ने गुरुवार को यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की की वाशिंगटन यात्रा के दौरान पैकेज की घोषणा की। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी रक्षा विभाग ने एक बयान में कहा कि पैकेज में काउंटर-एयरस्ट्राइक सिस्टम, दोहरे उद्देश्य वाले उन्नत पारंपरिक युद्ध सामग्री और एंटी-टैंक हथियार शामिल हैं। हालांकि, पैकेज में लंबी दूरी की एटीएसीएमएस मिसाइलें शामिल नहीं हैं जो 300 किमी दूर तक वार कर सके। अमेरिकी मीडिया ने बताया कि जेलेंस्की ने इससे पहले यूक्रेन के लिए अधिक सहायता पर चर्चा करने के लिए बाइडेन, अमेरिकी कांग्रेस सदस्यों और रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन से मुलाकात की। यह पैकेज अतिरिक्त 24 बिलियन से अलग है जिसे बाइडेन चाहते हैं कि कांग्रेस कुछ रिपब्लिकन प्रतिनिधियों की आपत्ति के बावजूद यूक्रेन के लिए मंजूरी दे। अमेरिकी सरकार के आंकड़ों के अनुसार, फरवरी 2022 से यूक्रेन को 43.9 बिलियन डॉलर की सहायता दी गई है। यूक्रेन को सहायता देना अगले वित्तीय वर्ष के बजट पर कांग्रेस के गतिरोध में मुख्य मुद्दों में से एक रही है, जिसके कारण 30 सितंबर के बाद अमेरिकी संघीय सरकार शटडाउन हो सकती है।

इंडोनेशिया का माउंट सेमेरू ज्वालामुखी फटा

जकार्ता। इंडोनेशिया के पूर्वी जावा प्रांत में सेमेरू ज्वालामुखी शुक्रवार को फट गया और उसमें से गर्म राख निकलने लगी। स्थानीय अधिकारियों ने लोगों को इलाके से दूर रहने की चेतावनी दी है। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, सेमेरू ज्वालामुखी मॉनिटरिंग पोस्ट के अनुसार, ज्वालामुखी स्थानीय समयानुसार सुबह 9:23 बजे फटा, जिससे क्रेटर से दक्षिण-पूर्व की ओर 700 मीटर दूर तक गर्म राख फैल गई। निगरानी चौकी के एक अधिकारी यादी यूलियांडी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा, 'ज्वालामुखी के विस्फोट से दक्षिण-पूर्व और दक्षिण की ओर मोटी, भूरे रंग की राख फैल गई।' अधिकारियों ने लोगों से सतर्क रहने और इसके 13 किमी के दक्षिणपूर्वी क्षेत्र और शिखर के आसपास 5 किमी के दायरे में जाने से बचने का आह्वान किया है। समुद्र तल से 3,676 मीटर की ऊंचाई पर स्थित सेमेरू ज्वालामुखी खतरे के उच्चतम स्तर चार से नीचे तीसरे स्तर पर बना हुआ है। दिसंबर 2021 में इसके विस्फोट के कारण हजारों लोगों को घर छोड़कर भागना पड़ा था और 50 से अधिक लोगों की जान चली गई थी।

ताइवान का दावा, सीमा के पास नजर आए 24 चीनी सैन्य विमान

ताइवान के आसपास हाल की चीनी सैन्य गतिविधियां असामान्य नजर आईं। द्वीप के रक्षा मंत्री ने कहा कि ताइपे ने द्वीप के सामने वाले प्रांत में अभ्यास के अलावा उभयचर अभ्यासों को हरी झंडी दिखाई। ताइवान ने पिछले सप्ताह के दौरान ऐसी गतिविधि में वृद्धि की सूचना दी है, क्योंकि दर्जनों लड़ाकू विमान, ड्रोन, बमवर्षक और अन्य विमान, साथ ही युद्धपोत, पास में सक्रिय हैं। चीन लोकतांत्रिक रूप से शासित ताइवान को अपने क्षेत्र के रूप में देखता है। हाल के वर्षों में अपनी संप्रभुता के दावों पर जोर देने और ताइपे पर दबाव बनाने के लिए द्वीप के चारों ओर कई ऐसे अभ्यास किए हैं। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि पिछले 24 घंटे की अवधि में उसने 24 चीनी वायु सेना के विमानों को ताइवान के वायु रक्षा क्षेत्र में प्रवेश करते हुए पाया गया। यह एक नियमित पैटर्न का हिस्सा है। मंत्रालय द्वारा प्रकाशित मानचित्र के अनुसार, कम से कम 17 विमान ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार कर गए। मध्य रेखा पहले दोनों पक्षों के बीच एक अनौपचारिक बाधा के रूप में काम करती थी जब तक कि चीन की वायु सेना ने पिछले साल नियमित रूप से इसे पार करना शुरू नहीं किया।

हिरासत के छह साल बाद उइघुर स्कॉलर को आजीवन करावास की सजा

बीजिंग। प्रसिद्ध उइघुर विद्वान राहिले दाउत को एक चीनी अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई। वॉयस ऑफ अमेरिका की रिपोर्ट के अनुसार, कैलिफोर्निया में अधिकार समूह दुई फाउंडेशन ने घोषणा की कि चीनी सरकार के एक सूत्र ने पुष्टि की है कि दाउत को कथित तौर पर राज्य की सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। वह देश के सुदूर उत्तर-पश्चिमी शिनजियांग प्रांत में उइघुर लोगों पर चीन की कार्रवाई का शिकार होने वालों में से एक है। उइघुर अधिकार समूहों के अनुसार, इस क्षेत्र में जातीय समूह के 300 से अधिक बुद्धिजीवियों को उनकी संस्कृति को नष्ट करने के प्रयास में हिरासत में लिया गया था। झिंजियांग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और एक प्रसिद्ध बुद्धिजीवी दावुत पहली बार 2017 में गायब हो गए थे। उन पर अलगाववाद का आरोप लगाया गया था। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं था कि उसे कब सजा सुनाई गई थी और अब जाकर ही किसी विश्वसनीय स्रोत ने उसकी सजा की पुष्टि की है। डुई हुआ फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक जॉन कैम ने वीओए के हवाले से कहा कि उइगरों के बीच, बुद्धिजीवियों और विद्वानों और प्रोफेसरों को बहुत उच्च सम्मान दिया जाता है। इसलिए जब आप उन पर प्रहार करते हैं, तो आप उइघुर संस्कृति के मूल पर प्रहार करते हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार, मीडिया रिपोर्टों का अनुमान है कि प्रांत में लगभग 30 लाख लोगों को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया गया और दस लाख से अधिक लोगों को सामूहिक पुन: शिक्षा शिविरों में रखा गया। उइघुर लोककथाओं, संस्कृति और विरासत पर केंद्रित दाउत की छात्रवृत्ति और उसकी आजीवन कारावास की सजा, उइघुर अधिकार समूहों का कहना है, उइघुर संस्कृति को नष्ट करने के चीन के इरादे को दर्शाता है।

स्वीडन के रेस्तरां में गोलीबारी, 2 की मौत, पुलिस जांच में जुटी

पूर्वी स्वीडन के एक रेस्तरां में गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और दो घायल हो गए, पुलिस ने कहा कि यह आपराधिक गिरोहों के बीच बढ़ती हिंसा का हिस्सा प्रतीत होता है। स्वीडन हाल के वर्षों में गोलीबारी और बमबारी की लहर से हिल गया है जो पिछले महीनों में तेज हो गई है और लगभग दैनिक घटना बन गई है। पुलिस ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि स्टॉकहोम से 190 किलोमीटर उत्तर में छोटे से शहर सैंडविकेन में एक रेस्तरां में गोलीबारी के बाद कई लोगों को अस्पताल ले जाया गया और दो की चोटों के कारण मौत हो गई। पुलिस प्रवक्ता मैग्नस जानसन क्लारिन ने स्वीडिश समाचार एजेंसी टीटी को बताया कि हम सैंडविकेन में अतीत में हुई गोलीबारी और हाल ही में हुई हिंसा के कनेक्शन की जांच कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संभवत: इसका संबंध आपराधिक माहौल से है, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि यह किस समूह के बारे में होगा। जानसन क्लारिन ने कहा कि पुलिस को संदेह है कि मृतकों में से एक को हमले का निशाना बनाया गया था, जबकि मारे गए अन्य तीन लोग संभवत- आकस्मिक रूप से अनपेक्षित शिकार थे।

घाना में अज्ञात बंदूकधारियों ने बसों पर की गोलीबारी, 9 की मौत

अकरा। पश्चिम अफ्रीकी देश घाना के ऊपरी पूर्व क्षेत्र में बसों पर अज्ञात बंदूकधारियों के एक समूह की गोलीबारी में कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और कुछ अन्य घायल हो गए। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, पुसिगा के जिला मुख्य कार्यकारी जुबेरू अब्दुलाई ने कहा कि लोगों पर उस समय हमला हुआ जब वे ऊपरी पूर्व क्षेत्र के एक अशांत शहरी समुदाय बावकू से पड़ोसी बुर्किना फासो के एक बाजार की ओर जा रहे थे। अब्दुलाई ने कहा, 'बावकू और उसके आसपास सशस्त्र हमलों के कारण व्यापारी पुलिस एस्कॉर्ट के साथ एक काफिले में थे, जब अज्ञात बंदूकधारियों ने अचानक पुसिगा के पास बसों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें नौ लोगों की मौत हो गई और अन्य घायल हो गए।' सुरक्षा सेवाओं ने त्वरित प्रतिक्रिया दी और सुरक्षा कड़ी करते हुए हमलावरों की तलाश शुरू कर दी है। अभी तक किसी भी समूह ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

भारत को कोई विशेष छूट नहीं दी जाएगी, कनाडा के आरोपों पर अमेरिका ने दी कड़ी प्रतिक्रिया

वाशिंगटन (एजेंसी)। कनाडा की धरती पर खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के आरोपों को लेकर नई दिल्ली और ओटावा के बीच बढ़ते राजनयिक तनाव के बीच अमेरिका ने को कहा कि वह भारत और कनाडा के साथ लगातार संपर्क में है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन ने संवाददाताओं से कहा कि मैं उन निजी राजनयिक बातचीत में शामिल नहीं होने जा रहा हूं जो इस विषय पर पहले ही हो चुकी हैं या होने वाली हैं। हम इस मुद्दे पर उच्च स्तर पर भारतीयों के संपर्क में हैं और रहेंगे। जब उनसे पूछा गया कि क्या अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन राजनयिक विवाद पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से बात करने का इरादा रखते हैं। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए चिंता का विषय है। इसे हम गंभीरता से लेते हैं। यह ऐसी चीज है जिस पर हम काम करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि मामले में भारत को कोई विशेष छूट नहीं दी गई है।

कनाडाई प्रधान मंत्री ट्रूडो ने सोमवार को प्रतिबंधित खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के प्रमुख निज्जर की हत्या में भारत सरकार के एजेंटों की संलिप्तता का आरोप लगाया। नई दिल्ली ने दावों को बेतुका और प्रेरित कहकर सिरे से खारिज कर दिया और इस मामले में ओटावा द्वारा एक भारतीय अधिकारी को निष्कासित करने के बदले में एक वरिष्ठ कनाडाई राजनयिक को निष्कासित कर दिया। भारत के सबसे वांछित आतंकवादियों में से एक निज्जर, जिसके सिर पर 10 लाख रुपये का नकद इनाम था, की 18 जून को पश्चिमी कनाडाई प्रांत ब्रिटिश कोलंबिया के सरे में एक गुरुद्वारे के बाहर दो अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। सुलिवन ने उन सुझावों को खारिज कर दिया कि भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने की अमेरिका की इच्छा आरोपों के बारे में चिंता व्यक्त करने की उसकी क्षमता को बाधित करेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि बिडेन प्रशासन ने कनाडा के आरोपों को 'गंभीरता से' लिया है और वह ओटावा के साथ लगातार संपर्क में है।

फाइनेंशियल टाइम्स ने सुलिवन के हवाले से कहा कि हम अपने कनाडाई समकक्षों के साथ लगातार संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यों के लिए आपको कोई विशेष छूट नहीं मिलती है। देश चाहे जो भी हो, हम खड़े होंगे और अपने बुनियादी सिद्धांतों की रक्षा करेंगे। हम कनाडा जैसे सहयोगियों के साथ भी निकटता से परामर्श करेंगे क्योंकि वे अपने कानून प्रवर्तन और राजनयिक प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहे हैं। जैसा कि मीडिया के एक वर्ग ने संकेत दिया है, सुलिवन ने इस मुद्दे पर अमेरिका और कनाडा के बीच मतभेद के विचार को दृढ़ता से खारिज कर दिया।

कनाडा में नफरत के लिए कोई जगह नहीं : सार्वजनिक सुरक्षा विभाग

ओटावा। कनाडा ने शुक्रवार को एक भड़काऊ ऑनलाइन वीडियो के प्रसार के बीच कहा कि देश में नफरत के लिए कोई जगह नहीं है। वीडियो में हिंदू कनाडाई लोगों को देश छोड़ने के लिए कहा गया है। जन सुरक्षा के लिए जिम्मेदार विभाग सार्वजनिक सुरक्षा कनाडा ने कहा, 'वीडियो का प्रसार आक्रामक और घृणास्पद है, और यह सभी कनाडाई लोगों और हमारे मूल्यों का अपमान है।' एक्स पर एक पोस्ट में विभाग ने कहा : 'कनाडा में नफरत के लिए कोई जगह नहीं है। एक ऑनलाइन वीडियो का प्रसार जिसमें हिंदू कनाडाई लोगों को कनाडा छोड़ने के लिए कहा गया है, अपमानजनक और घृणास्पद है। यह सभी कनाडाई और उन मूल्यों का अपमान है जिन्हें हम बहुत महत्व देते हैं।' उसने लिखा, 'आक्रामकता, नफरत, डराने-धमकाने या डर पैदा करने वाली कार्रवाइयों के लिए इस देश में कोई स्थान नहीं है। ये केवल हमें विभाजित करने का काम करते हैं। हम सभी कनाडाई लोगों से एक-दूसरे का सम्मान करने और कानून के शासन का पालन करने का आग्रह करते हैं। कनाडाई अपने समुदायों में सुरक्षित महसूस करने के हकदार हैं।' यह वीडियो ऐसे समय में प्रसारित किया गया है जब भारत और कनाडा के संबंधों में राजनयिक विवाद गहरा गये हैं। कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो ने कनाडाई नागरिक और सिख अलगाववादी नेता हरदीप सिंह निज्जर की जून ब्रिटिश कोलंबिया में हत्या में भारतीय खुफिया एजेंसी की संलिप्तता का आरोप लगाया है। निज्जर को 2020 में भारत द्वारा नामित आतंकवादी घोषित किया गया था।

भारत को उकसाना या परेशानी पैदा नहीं चाहता कनाडा

-पीएम जस्टिन ट्रूडो के तेवर पड़े नरम

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। ताजा राजनयिक विवाद के बीच कनाडा प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो कहा कि भारत को 'उकसाना या उसके लिए परेशानियां पैदा' करना नहीं चाहता है। भारत से उन्होंने खालिस्तानी चरमपंथी नेता की हत्या को बहुत गंभीरता से लेने और सच्चाई सामने लाने के लिए कनाडा के साथ मिलकर काम करने का आग्रह किया।

भारत और कनाडा के बीच राजनयिक विवाद पर सवालों के जवाब में ट्रूडो ने कहा कि 'हम भारत सरकार से इस मामले को गंभीरता से लेने और इस मामले में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करने, जवाबदेही तय करने और न्याय सुनिश्चित करने के लिए हमारे साथ काम करने की अपील करते हैं।'संयुक्त राष्ट्र महासभा के 78वें सत्र में भाग लेने के लिए न्यूयॉर्क में आए ट्रूडो ने कहा कि 'हम कानून के शासन वाले देश हैं। हम कनाडाई लोगों को सुरक्षित रखने और हमारे मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय नियम-आधारित व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाना जारी रखेंगे। अभी हमारा ध्यान इसी पर है।' यह पूछे जाने पर कि क्या भारत द्वारा कनाडाई लोगों के लिए वीजा सेवाओं को निर्लंबित किए जाने के बाद उनकी सरकार कोई जवाबी कदम उठाएगी, ट्रूडो ने कहा कि उनकी सरकार भड़काने या समस्या पैदा करने के बारे में नहीं सोच रही है।

ट्रूडो ने कहा कि 'इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत का महत्व बढ़ रहा है और ऐसा देश है जिसके साथ हमें काम करते रहने की जरूरत है, और ऐसा सिर्फ क्षेत्रीय नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर है। हम उकसाने या समस्याएं पैदा करने के बारे में नहीं सोच रहे हैं। लेकिन हम कानून के शासन के महत्व के बारे में स्पष्ट हैं और कनाडाई लोगों की सुरक्षा के महत्व पर भी स्पष्ट हैं।' उन्होंने कहा कि 'इसलिए हम भारत सरकार से अपील करते हैं कि वह मामले की सच्चाई सामने लाने और न्याय तथा जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाएं स्थापित करने के लिए हमारे साथ मिलकर काम करे।'

इस मामले में कनाडा द्वारा एक भारतीय अधिकारी के निष्कासन के बदले में भारत ने एक वरिष्ठ कनाडाई राजनयिक को निष्कासित कर दिया। ट्रूडो से जब पूछा गया कि क्या इस मामले में उनके द्वारा सुझाए गए सबूत ठोस हैं, तो उन्होंने कहा कि 'मैं वही कह रहा हूं और वही दोहरा रहा हूं जो मैंने सोमवार दोपहर को कहा था। बेशक, ऐसे विश्वसनीय आरोप हैं जिन्हें हमें बेहद गंभीरता से लेने की जरूरत है' उन्होंने कहा कि 'हमारे पास एक कठोर और स्वतंत्र न्याय प्रणाली और मजबूत प्रक्रियाएं हैं जो अपनी परिपाटी का पालन करेंगी। हम भारत सरकार से इस मामले की सच्चाई सामने लाने के साथ हमारे साथ मिलकर काम करने की अपील करते हैं।' एक अन्य सवाल के जवाब में ट्रूडो ने कहा कि 10 सितंबर को नयी दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन से इतर उनकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ 'सीधी और स्पष्ट बातचीत' हुई थी। जिसमें उन्होंने अपनी 'चिंताओं को बिना किसी अनिश्चित शब्दों के' साझा किया था। ट्रूडो के ब्रिटिश कोलंबिया में 18 जून को खालिस्तानी चरमपंथी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों की 'संभावित' संलिप्तता का आरोप लगाए जाने के बाद इस हफ्ते की शुरुआत में भारत और कनाडा के बीच तनाव बढ़ गया।

भारत की 'असलियत' देखने में विफल रहे पश्चिमी देश : पाक पीएम

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवर उल हक काकर ने कहा है कि कनाडा द्वारा एक कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर, की हत्या में भारत की संलिप्तता का आरोप लगाने के बाद पश्चिमी देश 'भारत के दक्षिणपंथी नेतृत्व की वास्तविकता को देखने और महसूस करने में विफल' रहे हैं। निज्जर को 2020 में नई दिल्ली द्वारा आतंकवादी घोषित किया गया था। विदेश संबंध परिषद में बोलते हुए, पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने कहा, ÷नरेंद्र मोदी के हिंदू राष्ट्रवाद दृष्टिकोण से प्रेरित भाजपा की हिंदुत्व विचारधारा कनाडा में निज्जर की हत्या से जुड़ी हुई है।' पाकिस्तानी पीएम ने कहा, 'हिंदुत्व की ये विचारधाराएं इस तरह से प्रोत्साहित होती जा रही हैं कि वे क्षेत्र से बाहर जा रही हैं।' उन्होंने कहा, 'कनाडाई धरती पर सिंह की दुर्भाग्यपूर्ण हत्या उस अशुभ प्रवृत्ति का प्रतिबिंब है।' प्रधान मंत्री काकर ने कहा कि इस मामले पर पश्चिम की ओर से 'गर्म प्रतिक्रिया' कनाडाई दावे के साथ समस्याओं के कारण नहीं है, बल्कि स्पष्ट आर्थिक और रणनीतिक कारणों से हैं। पाकिस्तान के प्रधान मंत्री का बयान पाकिस्तान के विदेश कार्यालय द्वारा भारत-कनाडा गतिरोध पर एक रुख अपनाने के बाद आया है, इसमें कहा गया है कि 'कनाडाई धरती पर एक कनाडाई नागरिक की भारत द्वारा हत्या अंतरराष्ट्रीय कानून और राज्य संप्रभुता के संयुक्त राष्ट्र सिद्धांत का स्पष्ट उल्लंघन है।' भारत में राज्येतर हत्याओं का नेटवर्क अब वैश्विक हो गया है।' 18 जून, 2023 को दो अज्ञात लोगों द्वारा एक सिख गुरुद्वारे के बाहर मारे गए निज्जर की हत्या में भारतीय खुफिया और राज्य की कथित संलिप्तता का खुलासा करने वाले कनाडाई प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो के दावे के बाद भारत-कनाडा गतिरोध बढ़ गया है। हर गुज़रते दिन के साथ यह बढ़ता और तीव्र होता जा रहा है। कनाडा ने एक भारतीय खुफिया स्टेशन प्रमुख पवन कुमार राय को निष्कासित कर दिया, जबकि भारत ने उसी दिन एक कनाडाई शीर्ष राजनयिक को निष्कासित कर दिया। मामला लगातार बिगड़ता जा रहा है। दोनों पक्षों ने अपने नागरिकों को यात्रा सलाह जारी की है, अपने राजनयिकों की संख्या कम करने का फैसला किया है, जबकि भारत ने सभी कनाडाई नागरिकों को भारत का वीजा जारी करना रद्द कर दिया है। और चूंकि यूएनजीए में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व अंतरिम प्रधान मंत्री द्वारा किया जा रहा है; इस अवसर का उपयोग भारत को निशाना बनाने के लिए किया जा रहा है, न केवल जम्मू-कश्मीर के मुद्दे के संदर्भ में बल्कि भारत और कनाडा से संबंधित मामले पर भी। पाकिस्तान का कहना है कि अमेरिका के नेतृत्व वाली पश्चिमी शक्तियां वर्षों से भारत को चीन की बढ़ती आर्थिक और क्षेत्रीय ताकत और स्थिति का मुकाबला करने के लिए एक स्वाभाविक सहयोगी के रूप में प्रोत्साहित कर रही हैं।

किम-पुतिन की हालिया बैठक के नतीजे पर चर्चा के लिए पोलित ब्यूरो की बैठक

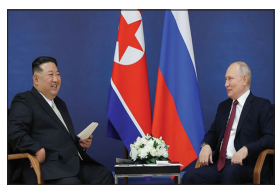

सोल (एजेंसी)। उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग-उन ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अपनी हालिया बैठक के नतीजे पर चर्चा करने के लिए शीर्ष अधिकारियों के साथ पोलित ब्यूरो बैठक की। कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी (केसीएनए) ने कहा, बुधवार को वर्कर्स पार्टी की केंद्रीय समिति की पोलित ब्यूरो बैठक के दौरान अधिकारियों ने किम की रूस यात्रा के महत्व का विश्लेषण किया और अपने द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करने के लिए दीर्घकालिक योजनाएं पेश कीं। योनहाप समाचार एजेंसी ने बताया कि किम ने सभी क्षेत्रों में अपने द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने और उन्हें एक नए उच्च स्तर पर ले जाने के लिए 'रचनात्मक उपायों' के सक्रिय कार्यान्वयन का आह्वान किया। सहयोग के विस्तार और विकास के लिए 'दोनों देशों के प्रासंगिक क्षेत्रों के बीच घनिष्ठ संपर्क और सहयोग को मजबूत करने' की आवश्यकता पर बल दिया। केसीएनए ने अधिक विवरण दिए बिना कहा, बैठक में किम द्वारा अपनी बाहरी गतिविधियों के माध्यम से हासिल की गई सफलताओं को व्यावहारिक और व्यापक रूप से लागू करने के तरीकों पर भी चर्चा हुई। समिति के विभाग निदेशक किम सोंग-नाम ने कहा कि हालिया यात्रा ने उत्तर कोरिया-रूस संबंधों को नए युग की मांग के जवाब में नए रणनीतिक स्तर पर ला दिया है और विश्व भू-राजनीतिक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन लाया दोनों नेताओं के बीच शिखर सम्मेलन पिछले बुधवार को रूस के सुदूर पूर्व में वोस्तोचन अंतरिक्ष केंद्र में हुआ था।

चीन और सीरिया का नया गठजोड़, 20 साल बाद बीजिंग पहुंचे असद

बीजिंग (एजेंसी)। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने शुक्रवार को राष्ट्रपति बशर अल-असद के साथ बातचीत के दौरान सीरिया के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। सीरिया अपने तबाह मुल्क के पुनर्निर्माण में मदद के लिए वित्तीय सहायता की उम्मीद में है। नेताओं ने एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह की पूर्व संध्या पर मुलाकात की, जिसमें असद 2004 के बाद अपनी पहली चीन यात्रा के हिस्से के रूप में भाग लेंगे। चीन मध्य पूर्व के बाहर के उन चुनिंदा देशों में से एक है, जहां असद ने 2011 में गृह युद्ध शुरू होने के बाद से दौरा किया है। 2011 के सीरिया के गृह युद्ध में पांच लाख से अधिक लोग मारे गए, लाखों लोग विस्थापित हुए और सीरिया के बुनियादी ढांचे और उद्योग को नुकसान पहुंचा।

पश्चिम देशों द्वारा किनारे किए जाने वाले नेताओं की लिस्ट में असद नवीनतम हैं जिनका बीजिंग द्वारा स्वागत किया गया है। इस वर्ष वेनेजुएला के नेता निकोलस मादुरो और ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी के साथ-साथ शीर्ष रूसी अधिकारी भी दौरे पर आए हैं। चीनी राज्य समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और उनके सीरियाई समकक्ष बशर अल-असद ने शुक्रवार को संयुक्त रूप से चीन-सीरिया रणनीतिक साझेदारी की स्थापना की घोषणा की।

सीसीटीवी वीडियो में दिखाया गया है कि प्रत्येक नेता एक बड़ी आयताकार मेज पर नौ सहयोगियों के साथ मौजूद थे। बैठक कक्ष में एक चीनी पेंटिंग के सामने प्रत्येक देश के दो झंडे लगाए गए थे। शी ने कहा कि दोनों देशों के बीच संबंध अंतर्राष्ट्रीय परिवर्तनों की कसौटी पर खरे उतरे हैं। चीनी नेता ने कहा कि बीजिंग विदेशी हस्तक्षेप का विरोध करने, एकतरफा बदमाशी का विरोध करने, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में सीरिया का समर्थन करता है। सीरियाई राज्य समाचार एजेंसी सना के एक रीडआउट के अनुसार, असद ने कहा कि सीरियाई लोगों के साथ उनके हितों और उनके परीक्षणों में खड़े होने के लिए आपने जो कुछ भी किया है, उसके लिए वह चीनी सरकार को धन्यवाद देते हैं।

भारत-कनाडा का विवाद, पाकिस्तान की फसाद, खालिस्तानियों और आईएसआई के नापाक गठजोड़ का हुआ खुलासा, प्रदर्शन को लेकर बनाया ये प्लान

वाशिंगटन (एजेंसी)। खुफिया एजेंसियों के मुताबिक पाकिस्तान का आईएसआई खालिस्तानियों की मदद कर रहा है। आईएसआई खालिस्तान के साथ मिलकर तैयारी कर रहा है। सूत्रों के अनुसार पाकिस्तान भारत-कनाडा का फायदा उठाने की फिराक में है। इसके लिए आईएसआई की तरफ से भड़काउ पोस्टर भी तैयार किए जा रहे हैं। कनाडा के ओटावा समेत दूसरे शहरों में स्थित भारतीय दूतावासों के सामने खालिस्तानियों के प्रदर्शनों में आईएसआई ने कनाडा में रह रहे पाकिस्तानियों को शामिल होने के लिए कहा है। आईएसआई ने अपने फरमान में पाकिस्तानियों से पहचान को छिपाकर खालिस्तानियों की भीड़ में शामिल होने के लिए कहा है।

पाकिस्तानियों को पहचान छिपा भीड़ में शामिल होने के निर्देश

आईएसआई चाहता है कि खालिस्तानियों की मदद के लिए पाकिस्तानी नागरिक अपनी पहचान छिपा कर प्रदर्शनों में शामिल हों, जिससे किसी को पाकिस्तानियों के इस भीड़ में शामिल होने का शक न हो। इसके साथ ही कनाडा में आईएसआई के एजेंट खालिस्तानियों की मदद के किये भारत के खिलाफ भड़काऊई पोस्टर और बैनर तैयार करने में भी खआलिस्तानियों की सहायता कर रहे हैं।

झूठे नैरेटिव गढ़ने में लगा

खालिस्तानी अलगाववाद की वकालत करने के इतिहास वाले सिख संगठन दल खालसा के विरोध प्रदर्शन का एक पुराना वीडियो व्यापक रूप से साझा किया गया था। कथित तौर पर यह विरोध ट्रूडो के आरोपों की प्रतिक्रिया थी। 19 सितंबर को शाम 6 बजे के आसपास द इंटेल कंसोर्टियम नाम से संचालित होने वाले @IntelPk_ नाम के एक ट्विटर अकाउंट ने सबसे पहले इस पुराने वीडियो क्लिप को पोस्ट किया था, जिसमें अमृतसर में चल रहे विरोध प्रदर्शन का झूठा सुझाव दिया गया था। ट्वीट में दावा किया गया कि कनाडा में हरदीप सिंह निज्जर की दुखद हत्या के जवाब में अमृतसर में रॉ कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है। सिख जोश के साथ खालिस्तान के समर्थन में नारे लगा रहे हैं। प्रकाश कुमार भील उपनाम के तहत ट्विटर अकाउंट @Dalitofficial को यह दावा करने के बाद हटा दिया गया है कि राष्ट्रपति भवन में सिख सुरक्षा कर्मियों को बदल दिया गया था और

भारतीय सेना ने सिख सैनिकों को छुट्टी के अनुरोध से इनकार कर दिया था।

केसीआर सरकार ने दिया बड़ा तोहफा, 9 लाख से ज्यादा किसानों का कर्ज हुआ माफ

हैदराबाद। तेलंगाना राज्य की केसीआर सरकार ने राज्य की जनता के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं को शुरू किया है। इसी क्रम में केसीआर सरकार ने राज्य के किसानों को बड़ा तोहफा दिया है। बता दें कि राज्य के किसानों को तेलंगाना सरकार की तरफ से 5,809.78 करोड़ रुपये का तोहफा दिया गया है। 9 लाख से ज्यादा किसानों के 1 लाख रुपए से कम के एग्री लोन को माफ किए जाने का ऐलान किया है। राज्य के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने अपने चुनावी वादे को पूरा करते हुए लोन माफी के लिए फंड जारी करने का ऐलान किया है।

1 लाख से कम लोन किया जाएगा माफ

मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने 1 लाख रुपये से कम लोन लेने वाले किसानों को लोन के बोझ से मुक्त किए जाने का ऐलान किया है। बता दें कि बैंकों को 99,999 रुपये तक के लोन का भुगतान करने का फैसला किया जाएगा। सीएम ने कहा कि किसानों की तरफ से बैंको में फौरन पैसा जमा किया जाएगा। के. चंद्रशेखर के निर्देश पर वित्त विभाग की तरफ से 9,02,843 किसानों के लिए 5,809.78 करोड़ रुपये जारी किए।

साल 2018 में दूसरी बार सत्ता संभालने के दौरान मुख्यमंत्री केसीआर ने 11 दिसंबर 2018 तक 1 लाख रुपये से कम फसली लोन लिए जाने वाले किसानों का कर्ज माफ किए जाने का वादा किया था। लेकिन कोविड-19 की महामारी, लॉकडाउन और नोटबंदी के कारण केसीआर सरकार को संसाधन जुटाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। ऐसे में सीएम ने इंडिपेंडेंस डे के मौके पर 45 दिनों में कर्ज माफी पूरी करने का फैसला किया।

किसानों का लोन होगा माफ

बता दें कि राज्य सरकार ने 50,000 रुपये तक का लोन लेने वाले 7,19,488 किसानों के बैंकों में 1,943.64 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। वहीं 99,999 रुपये तक की लोन राशि से निपटने के लिए नए आदेश जारी किए गए हैं। इस फैसले से 16,66,899 किसानों को फायदा पहुंचा है। राज्य सरकार के मंत्री तेलंगाना के किसानों के लिए इसे वरदान बता रहे हैं। वहीं इस साल के अंत कर राज्य में विधानसभा चुनाव होने हैं।

जन आक्रोश यात्रा के दौरान आपस में ही भीड़ गए कांग्रेस कार्यकर्ता, खूब चले लाठी-डंडे

भोपाल । मध्य प्रदेश में इस साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। राज्य में मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच है। हालांकि, दोनों पार्टियों में गुटबाजी भी समय-समय पर दिख जा रही हैं। मध्य प्रदेश के पवई क्षेत्र में जन आक्रोश यात्रा के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता आपस में ही झगड़ने लगे, जब उनमें से कुछ ने मुकेश नायक के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। घटना उस वक्त हुई जब कांग्रेस की जन आक्रोश यात्रा गुरुवार को दमोह से पवई विधानसभा के सिमरिया पहुंची. वहां पहले से मौजूद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुकेश नायक के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। इसके साथ ही उनके हाथों में 'मुकेश नायक मुर्दाबाद' जैसे नारे लिखी तख्तियां भी थीं। बताया जा रहा है कि स्थानीय कार्यकर्ता मुकेश नायक से नाखुश थे। उनकी मांग है कि पार्टी वहां से किसी स्थानीय कार्यकर्ता को मौका दे। दोनों पक्षों के कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। हालांकि, पुलिस ने हस्तक्षेप कर स्थिति को नियंत्रित कर लिया। मामले में केस दर्ज कर लिया गया है। झड़प के दौरान अरुण यादव और सीपी मित्तल समेत कई बड़े नेता भी वहां मौजूद थे। मुकेश नायक बुन्देलखण्ड में जन आक्रोश यात्रा के सह प्रभारी भी हैं। अपने ही इलाके में इस पद्धति के विरोध के बीच नायक की मुश्किलें बढ़ती दिख रही हैं। कांग्रेस 19 सितंबर से पूरे राज्य में अपनी 'जन आक्रोश यात्रा' निकाल रही है। कांग्रेस पार्टी मौजूदा भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार पर निशाना साधने के उद्देश्य से 19 सितंबर से राज्य भर में 'जन आक्रोश यात्रा' निकाल रही है। भाजपा ने तंज कसते हुए कहा कि जन आक्रोश झेल रहे कांग्रेसियों ने एक-दूसरे पर निकाला आक्रोश। दूसरी ओर पूर्व सीएम और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा कि प्रदेश भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आदिवासियों और महिलाओं पर अत्याचार में नंबर 1 है। ये आंकड़े मैं नहीं दे रहा हूं, ये केंद्र सरकार ने जारी किया है। ये हमारे प्रदेश की स्थिति है आज। प्रदेश का हर व्यक्ति या तो भ्रष्टाचार का गवाह है या इसका शिकार है। कोई भी निवेश करने को तैयार नहीं है। जब मैं कहता हूं कि छिंदवाड़ा आओ तो वे कहते हैं कि हम नागपुर जाएंगे क्योंकि यहां कोई भरोसा नहीं है।'

चंद्रबाबू नायडू की एफआईआर रद्द करने की मांग वाली याचिका खारिज, बढ़ाई गई दो दिनों की रिमांड

नई दिल्ली । भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) अदालत ने कथित करोड़ों रुपये के आंध्र प्रदेश कौशल विकास निगम भ्रष्टाचार मामले में तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख चंद्रबाबू नायडू को दो दिनों के लिए अपराध जांच विभाग (सीआईडी) को हिरासत में दे दिया है। आंध्र प्रदेश के अतिरिक्त महाधिवक्ता (एएजी) पी सुधाकर रेड्डी ने कहा कि नायडू को राजमुंदरी सेंट्रल जेल में रखा जाएगा और जांच की जाएगी। रेड्डी ने कहा कि चंद्रबाबू की जांच करने वाले अधिकारियों की सूची भी अदालत को दी जानी चाहिए। हिरासत में पूछताछ की रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में कोर्ट को दी जाए. जांच से जुड़ी तस्वीरें और वीडियो लीक नहीं होने चाहिए। राज्य विधानसभा में उनकी पार्टी के लगातार विरोध प्रदर्शन और कार्यवाही बाधित होने के बीच एसीबी अदालत द्वारा नायडू की न्यायिक हिरासत 24 सितंबर तक बढ़ाए जाने के कुछ घंटों बाद यह घटनाक्रम सामने आया। सूत्रों के मुताबिक, चंद्रबाबू नायडू, जो कथित कौशल विकास निगम घोटाले में गिरफ्तारी के बाद जेल में हैं, अपनी रिमांड सुनवाई के लिए वस्तुत: उपस्थित हुए। टीडीपी प्रमुख को मामले के सिलसिले में 9 सितंबर को नंद्याल में गिरफ्तार किया गया था।

पंजाब में मादक पदार्थ-हथियारों की तस्करी से निपटने के लिए कांग्रेस-आप ने एकजुट प्रयास की अपील की

नईदिल्ली। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) ने पंजाब में सीमा पार से ड्रोन के जरिये मादक पदार्थों एवं हथियारों की तस्करी को लेकर लोकसभा में चिंता जताई और इस पर अंकुश लगाने के लिए एकजुट प्रयास करने की अपील की। कांग्रेस के जसबीर सिंह गिल और आप नेता सुशील कुमार रिंकू ने सदन में ''चंद्रयान-3 की सफलता और अंतरिक्ष क्षेत्र में हमारे राष्ट्र की अन्य उपलब्धियां'' विषय पर चर्चा के दौरान पंजाब की समस्या का उल्लेख किया। गिल ने कहा कि खाद्यान्न संकट से कभी जूझने वाला भारत, पंजाब के किसानों की मेहनत से खाद्यान्न अधिशेष वाला देश बन गया। उन्होंने कहा कि चारों तरफ खतरा मौजूद है, एक तरफ पाकिस्तान है तो दूसरी ओर चीन। उन्होंने कहा कि ड्रोन के जरिये पंजाब के भीतर मादक पदार्थों की तस्करी धड़ल्ले से जारी है और इससे निपटने के लिए एकजुट प्रयास करना चाहिए क्योंकि यह सबकी जिम्मेदारी है। आप नेता रिंकू ने ड्रोन के जरिये पंजाब में हथियार की आपूर्ति किये जाने पर चिंता जताई और इससे निपटने के उपाय ढूंढने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए कनाडा, लंदन, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देश जाने वाले विद्यार्थियों के प्रमाण-पत्रों को मान्यता दिये जाने में आने वाली समस्या से निजात पाने की भी आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि सरकार को स्वदेश में ही समान स्तर की शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि विदेश में खर्च होने वाली लाखों-करोड़ों की राशि दूसरे देश में ना जाये और विद्यार्थियों को किसी प्रकार की समस्या भी ना हो।

नोएड़ा में पशुओं को जहर देकर मारने वाला ठेकेदार गिरफ्तार, खुलासे में सामने आई ये वजह

नई दिल्ली। अपने गिरोह के सदस्यों से पशुओं को जहरीला पदार्थ खिलवाकर उन्हें मारने तथा उनके शव को उठाकर मोटी रकम कमाने के धंधे में शामिल एक ठेकेदार को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से पुलिस ने एक देसी तमंचा और कारतूस भी बरामद किया है। इसके दो साथियों को पुलिस पूर्व में गिरफ्तार कर चुकी है। जारचा के थाना प्रभारी निरीक्षक ज्ञान सिंह ने बताया कि बृहस्पतिवार रात को पुलिस ने हापुड़ निवासी प्रदीप को गिरफ्तार किया। प्रदीप के पास से पुलिस ने एक देसी तमंचा और कारतूस बरामद किया है। सिंह ने बताया कि प्रदीप अपने गिरोह के सदस्यों के जरिए पशुओं को जहरीला पदार्थ खाने में मिलाकर देता था तथा उनकी मौत होने के बाद उनके शव को उठाकर मीट बेचने का कारोबार करने वाले लोगों को बेच देता था।

भारत ने अपने पश्चिमी साझेदारों और मित्रों से संपर्क साधा

नई दिल्ली (एजेंसी)। खालिस्तानी अलगाववादी की हत्या को लेकर कनाडा के साथ राजनयिक विवाद गहराने के बीच भारत ने कनाडा की धरती से बढ़ रही भारत-विरोधी तत्वों की गतिविधियों पर अपनी चिंताओं से प्रमुख पश्चिमी साझेदारों और मित्रों को अवगत कराया है। सूत्रों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि कनाडा ने खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या से संबंधित मामले में भारत को कोई विशेष जानकारी मुहैया नहीं करायी है।

बागची ने मीडिया से बातचीत में कहा, ''इस मामले में कनाडा द्वारा कोई विशेष जानकारी (हमारे साथ) साझा नहीं की गई है। हम (इस मामले में) हमें प्रदान की गई किसी भी विशिष्ट जानकारी पर गौर करने को तैयार हैं।''

कनाडा में 18 जून को हुई निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों की 'संभावित' संलिप्तता का आरोप कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो द्वारा लगाए जाने के बाद से भारत और कनाडा के संबंधों में तनाव आ गया है। भारत ने मंगलवार को इन आरोपों को 'बेतुका' और (निजी हितों से) 'प्रेरित' बताते हुए सिरे से खारिज कर दिया था।

इस मामले में कनाडा द्वारा एक भारतीय अधिकारी को निष्कासित किए जाने के बाद भारत ने भी एक वरिष्ठ कनाडाई राजनयिक को निष्कासित कर दिया था। बागची ने कहा, ''हम इस मामले सहित विभिन्न मुद्दों पर अपने सहयोगियों/मित्रों के संपर्क में हैं। हम इस पर चर्चा कर रहे हैं। हम इसे किस रूप में देखते हैं, इसपर अपने रुख से अवगत करा दिया है।'' उनसे पूछा गया था कि क्या भारत ने कनाडा के साथ अपने राजनयिक विवाद से अपने करीबी साझेदारों/मित्रों को अवगत कराया है। ऐसी सूचना है कि भारत ने ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका समेत अन्य देशों से संपर्क किया है और कनाडा में भारत विरोधी तत्वों की बढ़ती गतिविधियों पर अपनी चिंताओं से उन्हें अवगत कराया है।

ऊपर उद्धृत सूत्रों ने यह भी कहा कि भारत ने कनाडा के साथ राजनयिक विवाद पर अपने समग्र रुख से अपने प्रमुख मित्रों और भागीदारों को अवगत करा दिया है। बढ़ते राजनयिक तनाव के मद्देनजर भारत में अपने मिशनों की सुरक्षा को लेकर कनाडा की चिंताओं के बारे में पूछे जाने पर बागची ने कहा कि भारत अपने दायित्वों को बहुत गंभीरता से लेता है। उन्होंने कहा, ''हम निश्चित रूप से भारत में विदेशी राजनयिकों को पूरी सुरक्षा प्रदान करेंगे। हम कनाडा के अधिकारियों से भी उम्मीद करते हैं कि वे कनाडा में हमारे राजनयिकों के प्रति इसी तरह की संवेदनशीलता दिखाएंगे।

सनातन धर्म पर हमला करने वाली पार्टियों को 'इंडिया' गठबंधन से बाहर करें : प्रमोद कृष्णन

नई दिल्ली। संत प्रमोद कृष्णन ने सनातन धर्म पर हमला करने वाले नेताओं को रावण की संतान बताया और 'इंडिया' में शामिल पार्टियों से उन्हें विपक्षी गठबंधन से बाहर करने को कहा। कांग्रेस पार्टी से जुड़ाव रखने वाले कृष्णन ने यहां साधु-संतों से भेंट करने के बाद कहा, ''द्रमुक और समाजवादी पार्टी जैसे राजनीतिक दलों के नेता, जो सनातन धर्म को समाप्त करने की बात करते हैं, वे रावण के वंशज हैं। (इंडिया) गठबंधन के वरिष्ठ नेताओं को अपने गुट से ऐसी पार्टियों को बाहर कर देना चाहिए।'' इस संबंध में उन्होंने कहा कि जो सनातन के खिलाफ हैं, वे भारत के खिलाफ़ है क्योंकि बिना सनातन के भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा, ''अब समय आ गया है कि यह तय होना चाहिये कि आप सनातन के साथ खड़े हैं या उसके विरोधियों के।'' साधु-संतों ने भी सनातन के खिलाफ बोलने वाले नेताओं की निंदा करते हुई उनके विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की। संतो ने ऐसे नेताओं के खिलाफ राजद्रोह के मुकदमे दर्ज करने और ऐसी पार्टियों पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। उन्होंने सनातन धर्म के खिलाफ टिप्पणी करने वाले समाजवादी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य की भी आलोचना की और कहा कि विपक्षी दलों के 'इंडिया' गठबंधन में शामिल उनकी पार्टी को यह निर्णय लेना होगा कि वह रामायण और रामचरित मानस के साथ हैं या इनके विरोधियों के साथ। रामचरित मानस मुद्दे को जनवरी, 2022 में मौर्य ने ही छेड़ा था जब उन्होंने दावा किया था कि धार्मिक ग्रंथ के कुछ हिस्सों में समाज के एक बड़े वर्ग का जाति के आधार पर अपमान किया गया है।

राहुल गांधी का सरकार पर निशाना, बोले- सिर्फ ध्यान भटकने की हो रही कोशिश, पीएम मोदी ने ओबीसी के लिए क्या किया?

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद से महिला आरक्षण विधेयक पास होने के बाद राजनीति भी जारी है। भले ही लगभग सभी राजनीतिक दलों ने इसका समर्थन किया है। लेकिन कहीं ना कहीं उनकी ओर से सवाल भी उठाए जा रहे हैं। इन सबके बीच आज कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने साफ तौर पर कहा कि महिला आरक्षण को आज से ही लागू किया जा सकता है। लेकिन सरकार ऐसा नहीं करना चाहती। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना से ध्यान भटकने की लगातार सरकार की ओर से कोशिश हो रही है। उन्होंने मांग की की नारी शक्ति वंदन बिल से दो प्रावधान जनगणना और परिसीमन को हटाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण विधेयक बढ़िया है लेकिन हमें दो फुटनोट मिले कि जनगणना और परिसीमन उससे पहले करने की ज़रूरत है। इन दोनों में वर्षों लगेंगे।

उठाया ओबीसी का मुद्दा

कांग्रेस नेता ने कहा कि सच तो यह है कि आरक्षण आज लागू हो सकता है। यह कोई जटिल मामला नहीं है लेकिन सरकार ऐसा नहीं करना चाहती। उन्होंने कहा कि सरकार ने इसे देश के सामने पेश कर दिया है लेकिन इसे अब से 10 साल बाद लागू किया जाएगा। कोई नहीं जानता कि यह लागू भी होगा या नहीं। यह ध्यान भटकाने की युक्ति है। कांग्रेस सांसद ने कहा कि ऐसा क्या है जिससे आपका ध्यान हटाया जा रहा है? ओबीसी जनगणना से। मैंने संसद में एक संस्था के बारे में बात की, जो भारत सरकार चलाती है - कैबिनेट सचिव और सचिव...मैंने पूछा कि 90 में से केवल तीन लोग ओबीसी समुदाय से क्यों हैं?...मुझे समझ नहीं आता कि पीएम मोदी क्या बोलते हैं हर दिन ओबीसी की लेकिन उन्होंने उनके लिए क्या किया?

'पूर्ण बहुमत वाली सरकार बड़े फैसले लेती है'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को दिल्ली में बीजेपी मुख्यालय में पार्टी की महिला कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए महिला आरक्षण विधेयक पारित होने का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह भाजपा की प्रतिबद्धता थी और उसने आज इसे पूरा कर दिया। उन्होंने कहा कि दशकों की बाधाएं थीं, लेकिन जब इरादा स्पष्ट होता है, तो ÷हम परिणाम देखते हैं÷। उन्होंने बिल के पक्ष में वोट करने के लिए सांसदों को धन्यवाद देते हुए कहा कि सांसदों ने पार्टी लाइन से ऊपर उठकर बिल का समर्थन किया। मोदी ने कहा कि मैं आज देश की सभी महिलाओं को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। कल और परसों हमने एक नया इतिहास बनते देखा। हमारा सौभाग्य है कि करोड़ों लोगों ने हमें यह इतिहास बनाने का अवसर दिया है।

विपक्ष की ओर से प्रधानमंत्री का चयन 2024 लोकसभा चुनाव में जीत के बाद होगा : येचुरी

नालंदा (एजेंसी)। माकपा महासचिव, सीताराम येचुरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में सत्ता में आने के बाद विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' की ओर से प्रधानमंत्री पद के लिए व्यक्ति तय किया जाएगा। पटना से करीब 120 किमी दूर राजगीर में पत्रकारों से बातचीत में येचुरी ने कहा, 'इंडिया गठबंधन के सभी सहयोगी दल 2024 का लोकसभा चुनाव जीतने के बाद प्रधानमंत्री के बारे में फैसला करेंगे। 'इंडिया' गठबंधन के सत्ता में आने पर गठबंधन के निर्वाचित सांसद प्रधानमंत्री का चुनाव करेंगे। उन्होंने कहा कि यह सवाल पूछना उचित नहीं है कि 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलॉपमेंटल इंक्लूसिव एलायंस) गठबंधन के लिए प्रधानमंत्री का चेहरा कौन होगा। येचुरी ने कहा कि 2004 के लोकसभा चुनाव के दौरान भी यही सवाल उठाया गया था। 2004 के लोकसभा चुनाव में क्या हुआ, संप्रग सत्ता में आई और मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने और वह 10 साल तक प्रधानमंत्री रहे। माकपा के राज्यस्तरीय प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र में शामिल होने के बाद येचुरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'भारी बारिश के बीच राजगीर, नालंदा (बिहार) के लोगों से माकपा में शामिल होने का आग्रह कर रहा हूं। आज भारत को बचाने की लड़ाई में शामिल होने के लिए सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया ताकि भाजपा को हराकर और राज्य की सभी 40 सीटों पर 'इंडिया' गठबंधन की जीत सुनिश्चित किया जा सके।

कावेरी जल विवाद : सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप से इनकार के बाद कर्नाटक में तेज हो गया प्रदर्शन, तमिल बहुल इलाको में बढ़ाई गई सुरक्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट द्वारा गुरुवार को कावेरी जल प्रबंधन प्राधिकरण और विनियमन समिति के आदेशों में हस्तक्षेप करने से इनकार करने के बाद कर्नाटक के विभिन्न हिस्सों में शुक्रवार को विरोध प्रदर्शन जारी रहा, जिसमें राज्य को तमिलनाडु को 5,000 क्यूसेक पानी छोड़ने का निर्देश दिया गया था। किसान संगठनों और कन्नड़ समर्थक संगठनों ने कावेरी नदी बेसिन जिलों मैसूरु, मांड्या, चामराजनगर, रामानगर, बेंगलुरु और राज्य के अन्य हिस्सों में विरोध प्रदर्शन किया और अपना गुस्सा व्यक्त किया और राज्य सरकार से पड़ोसी राज्य को पानी नहीं छोड़ने का आग्रह किया।

कर्नाटक का कहना है कि वह कावेरी बेसिन क्षेत्रों में खड़ी फसलों के लिए पीने के पानी और सिंचाई की अपनी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पानी छोड़ने की स्थिति में नहीं है, क्योंकि मानसून में कम बारिश के कारण पानी की कमी हो गई है। विरोध चित्रदुर्ग, बल्लारी, दावणगेरे, कोप्पल और विजयपुरा जैसे जिलों में भी फैल गया है। रायथा हितरक्षण समिति के तत्वावधान में किसानों ने मांड्या में सर एम विश्वेश्वरैया की प्रतिमा के पास विरोध प्रदर्शन जारी रखा। वे आज पुराने मैसूरु क्षेत्र, जो कावेरी बेल्ट भी है, में एक प्रमुख धार्मिक मदरसा, आदिचुंचनगिरी मठ के प्रमुख, निर्मलानंदनाथ स्वामीजी से जुड़े हुए थे।

साइंटिफिक सर्वे पर हाई कोर्ट ले फैसला, सुप्रीम कोर्ट ने कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर सर्वेक्षण की याचिका खारिज कर दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर के वैज्ञानिक सर्वेक्षण की मांग करने वाली याचिका खारिज कर दी। कोर्ट ने इस मुद्दे पर फैसला करने का अधिकार इलाहाबाद उच्च न्यायालय पर छोड़ दिया गया। हाई कोर्ट ने इस मामले पर सुनवाई कर रहा है। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और सुधांशु धूलिया की पीठ ने कहा कि हमें लगता है कि हमें अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है, खासकर अंतरिम में क्योंकि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के समक्ष बड़े पैमाने पर कई मुद्दे लंबित हैं।

हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह विवाद पर लगभग 10 मुकदमे दायर किए गए हैं। 26 मई को हाई कोर्ट ने सभी मुकदमों की सुनवाई एक साथ करने का निर्देश दिया था। यह आदेश देवता की ओर से अगली मित्र (कानूनी प्रतिनिधि को इंगित करने वाला शब्द) रंजना अग्निहोत्री, एक वकील के माध्यम से दायर याचिका पर आया। श्री कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट ने सर्वेक्षण के लिए सुप्रीम कोर्ट कोर्ट में याचिका दायर की. ट्रस्ट की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता गौरव भाटिया ने कहा कि 31 मार्च को मथुरा की एक अदालत ने सर्वेक्षण का निर्देश देने से इनकार कर दिया। उन्होंने अदालत को बताया कि वे बाद में उच्च न्यायालय चले गए, जिसने 10 जुलाई को मथुरा अदालत के आदेश में कोई अवैधता नहीं पाते हुए अपील खारिज कर दी। भाटिया ने तर्क दिया कि उच्च न्यायालय अपने 10 जुलाई के आदेश पर अधिकार क्षेत्र का प्रयोग नहीं कर सकता।

ईदगाह समिति ने अदालत को सूचित किया कि उच्च न्यायालय में सभी मुकदमों को समेकित करने के 26 मई के आदेश के खिलाफ एक अपील उच्चतम न्यायालय में दायर की गई है और विचाराधीन है। पीठ ने कहा कि यहां पक्षों के अधिकारों और तर्कों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, याचिका खारिज की जाती है...' इसमें कहा गया है कि यह उच्च न्यायालय को निर्णय लेना है कि वे किस रास्ते पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

सनातन धर्म पर टिप्पणी के लिए उदयनिधि स्टालिन, 14 अन्य को सुप्रीम कोर्ट का नोटिस

नई दिल्ली । सनातन धर्म पर टिप्पणी के लिए उदयनिदी स्टालिन, 14 अन्य को सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस जारी किया है। अपनी टिप्पणियों में उदयनिधि स्टालिन, जो तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे हैं। उन्होंने लोगों के बीच विभाजन और भेदभाव को बढ़ावा देने के लिए %सनातन धर्म% को दोषी ठहराया था और इसके उन्मूलन का आह्वान किया था। बता दें कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे उदयनिधि, सनातन धर्म पर अपनी टिप्पणी के बाद विवादों में हैं। उन्होंने इसकी तुलना डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों से की और इसके उन्मूलन की मांग की थी। तमिलनाडु प्रोग्रेसिव राइटर्स एंड आर्टिस्ट एसोसिएशन की एक बैठक को संबोधित करते हुए उदयनिधि ने कहा कि सनातन समानता और सामाजिक न्याय के खिलाफ है। युवा मंत्री ने आरोप लगाया कि सनातन ने लोगों को जाति के आधार पर बांटा है।

चंद्रयान-3: चांद पर एक बार फिर टिकी सबकी निगाहें ! अब कल जागेंगे विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर

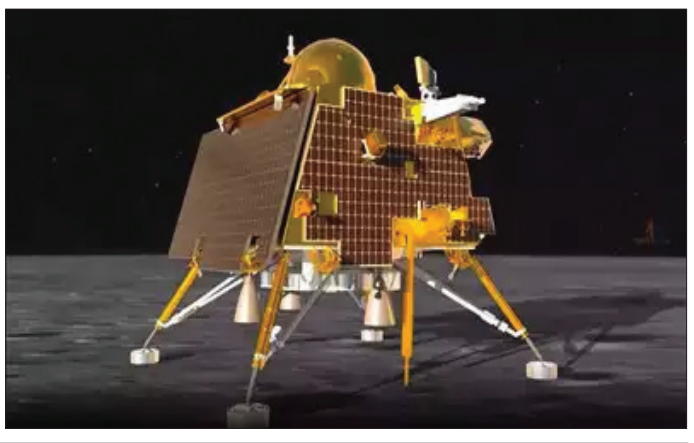

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में सभी की निगाहें चंद्रयान-3 मिशन पर है। इसमें आज विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर को सक्रिय करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन ये प्रक्रिया आज नहीं हो सकी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान को पुनर्जीवित करने की योजना शनिवार तक के लिए टाल दी है। अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के निदेशक नीलेश देसाई ने कहा कि पहले हमने 22 सितंबर की शाम को (प्रज्ञान) रोवर और (विक्रम) लैंडर को फिर से सक्रिय करने की योजना बनाई थी, लेकिन कुछ कारणों से अब हम इसे कल 23 सितंबर को करेंगे। मिशन के विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर, जो 23 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर उस स्थान पर सफलतापूर्वक उतरे थे, जिसे अब 'शिव शक्ति प्वाइंट' के नाम से जाना जाता है, 23 सितंबर को फिर से सक्रिय होने के लिए तैयार हैं। चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक प्रयोग करने के बाद इस महीने की शुरुआत में रोवर और लैंडर को स्लीप मोड में डाल दिया गया था। रोवर को 2 सितंबर को स्लीप मोड में डाल दिया गया था, उसके बाद 4 सितंबर को लैंडर को स्लीप मोड में डाल दिया गया था। अपने परिचालन चरण के दौरान, विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर ने कई चंद्र प्रयोगों को अंजाम दिया। प्रज्ञान रोवर ने चंद्रमा की सतह पर 100 मीटर से अधिक की दूरी तय की, जिससे दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्रमा की सतह में सल्फर (एस) की उपस्थिति की पुष्टि हुई। विक्रम लैंडर ने दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में निकट-सतह चंद्र प्लाज्मा वातावरण का अभूतपूर्व माप भी किया। इसरो ने शुरुआत में रोवर के लिए 300-350 मीटर की दूरी तय करने की योजना बनाई थी। हालाँकि, कुछ कारणों से रोवर अब तक केवल 105 मीटर ही आगे बढ़ पाया है। इसके बावजूद, मिशन ने अपने उद्देश्यों को पार कर लिया है, विक्रम लैंडर ने चंद्रमा पर हॉप परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है, जो भविष्य के चंद्रमा मिशन और मानव अन्वेषण के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत
गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

डोर टू डोर जाकर अमृत कलश हेतु मिट्टी संग्रह कर

अमृत कलश यात्रा निकाली गई

संवाददाता

धामपुर । आजादी के 75 वे अमृत महोत्सव के समापन कार्यक्रम के अवसर पर देश के बलिदान देने वाले वीरों को समर्पित अभियान मेरी माटी, मेरा देश ,के अंतर्गत विकासखंड अल्हैपुर धामपुर की ग्राम पंचायत मुबारकपुर टप्पा भारती में भाजपा विधायक अशोक कुमार राणा, जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान बॉबी, ब्लॉक प्रमुख क्षमता हेमलता चौहान द्वारा डोर टू डोर जाकर अमृत कलश हेतु मिट्टी संग्रह कर अमृत कलश यात्रा निकाली गई, कार्यक्रम के अवसर पर विधायक अशोक कुमार राणा ,जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान को ब्लॉक प्रमुख क्षमता हेमलता चौहान द्वारा पौधा देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा बनाये जा रहे छठे राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत गोदभराई एवं अन्नप्राशन संस्कार कार्यक्रम को विधायक अशोक कुमार राणा, जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान बॉबी तथा ब्लॉक प्रमुख क्षमा हेमलता चौहान द्वारा करवाया गया। कार्यक्रम में विधायक अशोक कुमार राणा द्वारा मेरी माटी, मेरा देश अभियान के बारे में विस्तार से बताया तथा देश के अमर शहीदों को याद करते हुए उनको नमन किया। तथा कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह बॉबी द्वारा मेरी माटी, मेरा देश अभियान पर अपने विचार व्यक्त किए। तथा ब्लॉक प्रमुख क्षमा हेमलता चौहान द्वारा छठे राष्ट्रीय पोषण माह के बारे में अपने संबोधन में विस्तार से बताया। कार्यक्रम के अवसर पर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि नीरज प्रताप सिंह ,मंडल अध्यक्ष धर्मवीर सिंह, अवनीश चौहान, अभिषेक कोहली, खंड विकास अधिकारी त्रिलोकचंद, एडीओ पंचायत नसीम अहमद, एडीओ देवस्वरूप सिंह, प्रभारी बाल विकास परियोजना अधिकारी हेमलता सैनी, ग्राम पंचायत सचिव सहदेव कुमार, हिमांशु चौहान ,सलमान खान, नीरज कुमार, वीरेंद्र कुमार, कृपाल सिंह ,मनोज कुमार ,आंगनबाड़ी कार्यकत्री आशा पंचायत सहायक वैभव चौहान ,खेम सिंह ,विकास कुमार ,नवीन चौहान, ग्राम प्रधान अनूप कुमार, हेमराज सिंह, निजामुद्दीन ,तथा ग्रामवासियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

पोषाहार: सरकार की मंशा है कोई न रहे कुपोषित: डिम्पल पांडेय

न्यूज स्पीक्स

कसया, कुशीनगर। हाटा बिकास खण्ड के गांव डुमरीचुरामनछपरा में शुक्रवार को तीनों केंद्रों पर पोषाहार का वितरण किया गया। ग्राम प्रधान डिम्पल पांडेय मौजूदगी में आंगनबाड़ी कार्यकत्री मुन्नी देवी ने गर्भवती व धात्री महिलाओं के साथ-साथ शून्य से तीन वर्ष तक के बच्चों को पोषाहार वितरित किया। प्रधान डिम्पल पांडेय ने कहा कि नियमित तौर पर पोषाहार का सेवन करने से गांव में कुपोषित बच्चों की संख्या घटेगी। गांव को कुपोषण मुक्त बनाने में मदद मिलेगी। इससे जच्चा व बच्चों को जरूरी विटामिन, प्रोटीन व कैलोरी मिलती है। वहीं अन्य आंगनबाड़ी केंद्रों पर कार्यकत्री उदभावती देवी शशिबाला श्रीवास्तव , सहायिका मंजू देवी नगिना देवी ने भी पोषाहार बांटा। इस अवसर पर राजु कुमार, मनोज कुमार, दिनेश कुमार, मुन्ना दुबे, अजित सिंह, दिवाकर पांडेय, महेंद्र, जयराम, रमेश, मंजेश आदि मौजूद रहे।

लोकसभा चुनाव में भाजपा को सबक सिखएगी जनता: सपा नेता का हसमुद्दीन

संवाददाता

कुशीनगर। देवरिया जाते समय समाजवादी पार्टी के विशेष आमंत्रित सदस्य हसमुद्दीन अंसारी का कसया, सिसवा - महन्थ चौराहा व बनवारी टोला व देवरिया जनपद में जगह - जगह सपाइयों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। श्री अंसारी का पार्टी जनों ने माला पहनाकर स्वागत किया। श्री अंसारी ने कहा कि आम जन जहां त्रस्त है वहीं महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी चरम पर है। भाजपा की नीतियों को जनता समझ गयी है। सपा जनहित की पार्टी है और उसने हमेशा जन विकास किया है। पार्टी में सबका हित है। आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में जनता भाजपा को सबक सिखाएगी। प्रदेश व देश में इंडिया गठबंधन विजयी होगा। श्री अंसारी का सिसवा - महन्थ चौराहे पर केदार नाथ यादव, सभासद विजेंदर कुमार सिंह उर्फ भगत सिंह, राम गुलाब यादव, संतोष यदुवंशी, कपिलदेव प्रसाद, संजय यादव, सनौउवर अंसारी, सीनू प्रसाद, अशोक सिंह, वशिष्ट यादव, सुरेश प्रसाद गोंद, जलील अंसारी, मौलवी अंसारी व केश्वर इंटर कालेज बनवारी टोला में पूर्व सपा जिलाध्यक्ष पुरंदर प्रताप यादव, देवेन्द्र यादव, अमरजीत यादव, पूर्व जिपंस मदन यादव आदि ने स्वागत किया।

स्वास्थ्य शिविर में 356 नपाप कर्मियों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। नगरपालिका परिषद कुशीनगर कार्यालय परिसर में आयोजित दो दिवसीय स्वास्थ्य जांच शिविर में 356 कर्मियों की निःशुल्क जांचकर सलाह व दवा वितरित किया गया। सीएचसी कसया के अधीक्षक डा0 मार्कण्डेय चतुर्वेदी के निर्देशन में आरबीएसके टीम ए प्रभारी चिकित्साधिकारी डा0 संजय कुमार सिंह द्वारा स्वास्थ्य टीम के एएनएम मीरा दूबे, विमलेश दूबे, वार्ड ब्वाय किशोर, अमजद अली, वीरेंद्र कुमार शर्मा, राकेश कुमार पाण्डेय, सतीश ओझा, प्रवीण पाण्डेय आदि के सहयोग से दो दिन में 356 कर्मियों की जांच कर सलाह दी गयी। बीपी, हाइपरटेंशन बीपी, शरीर में दर्द, खुजली आदि की जांच की गई। चिकित्साधिकारी डा0 संजय कुमार सिंह ने कर्मियों से काम के वक्त पीपी कीट, मास्क, गोलब्स लगाकर काम करने की सलाह दी और कहा कि इसके बाद शरीर की सफाई के बाद अपने नित्य क्रिया में जाएं। जरूरत की दशा में चिकित्सक की सलाह लें। स्वच्छता के लिए सफाई पर ध्यान दें व आस पास गंदगी न रहे इसका भी ख्याल रखें। नगर के सभी वार्डों में विशेष सफाई अभियान रोस्टर के अनुसार एंटी लार्वा एवं कीट नाशक दवाओं का छिड़काव एवं फागिंग कराया जा रहा है। जिनकी लाइव मॉनिटरिंग सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक की जा रही है। इस दौरान ईओ संतोष कुमार, लिपिक राजेश श्रीवास्तव, स्वच्छता प्रभारी श्रवण कुमार तिवारी, रास बिहारी श्रीवास्तव, उग्रसेन शर्मा, हरेंद्र यादव, मुस्तफा, साकेत गोविंद राव, विजय यादव, राजकुमार आदि कर्मी मौजूद रहे।

डीएम ने आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण के सम्बन्ध में ली विद्युत विभाग की बैठक

संवाददाता

सहारनपुर। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चन्द्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के संबंध में विद्युत विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। डॉ0 दिनेश चन्द्र ने निर्देश दिए कि शिकायत के निस्तारण के बाद शिकायतकर्ता से फीडबैक भी लिया जाए। साथ ही शिकायत के निस्तारण के समय संबंधित स्थल का जिओ टैग फोटो, गवाहों के हस्ताक्षर के उपरान्त की आख्या पोर्टल पर अपलोड की जाए।

उन्होने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी जन शिकायतों एवं समस्याओं के निस्तारण के प्रति गंभीर एवं संवेदनशील हैं। समय से शिकायतों, समस्याओं का निस्तारण न कर आप शासन के निदेशों का सीधे तौर पर उल्लंघन कर रहे हैं, जोकि किसी भी स्थिति में क्षम्य नहीं। उन्होंने कहा कि शासन के निदेशों का उल्लंघन करने पर लापरवाह व दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाएगी। जिला मजिस्ट्रेट ने आईजीआरएस प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कहा कि आईजीआरएस शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता में है। इस संबंध में सरकार का रुख भी स्पष्ट है। शासनादेश में उन सभी बातों का स्पष्ट रूप से जिक्र है कि कैसे-कैसे पूरी पारदर्शिता के साथ समस्याओं, शिकायतों का निराकरण कराया जाना है।

उन्होने निर्देश कि जनसुनवाई पोर्टल को प्रतिदिन देखा जाए और ध्यान रखें कि कोई भी सन्दर्भ डिफाल्टर न हो। जन सुनवाई पोर्टल पर प्रकरण डिफाल्टर होता है तो सम्बन्धित अधिकारी के विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही करते हुये शासन को अवगत करा दिया जायेगा। इस कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलिता क्षम्य नही होगी। डॉ0 दिनेश चन्द्र ने कहा कि आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों का निस्तारण ससमय गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। अगले माह में जनपद की बेहतर रैंकिंग आए इसके लिए सभी अधिकारी हर संभव प्रयास करें। उन्होंने सभी विभागीय अधिकारियों से कहा कि जिस स्तर पर शिकायत लंबित है या शिकायतकर्ता असंतुष्ट है, तो उसका कारण जानकर शीघ्र समाधान कराना सुनिश्चित करें। किसी भी स्तर पर लापरवाही पायी जाने पर जवाबदेही तय कर कार्रवाई की जाए। बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रशासन डॉ0 अर्चना द्विवेदी, मुख्य अभियन्ता श्री ए0के0अत्रेय सहित सभी अधिशासी अभियन्ता, सहायक अभियन्ता एवं अवर अभियन्ता आदि उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई जिला गंगा सुरक्षा समिति एवं पर्यावरण समिति की बैठक

संवाददाता

सहारनपुर। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चन्द्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला गंगा सुरक्षा समिति एवं पर्यावरण समिति की बैठक आयोजित की गयी। जिला गंगा सुरक्षा समिति के अन्तर्गत उप कृषि निदेशक को जनपद में जैविक खेती के संबंध में किये गये कार्यों की सफल कहानियों से अवगत कराने के निर्देश दिये गये। कुंआखेडा और गंदेवडा को जनपद में टूरिस्ट मॉडल के रूप में बनाए जाने के निर्देश दिये गये।

कुआंखेडा में गंगा आरती के कार्यक्रम को नियमित रूप से संचालित करने के लिए गंगा समिति के नाम से समिति बनाने के निर्देश दिये गये जिसमें उपजिलाधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी एवं ग्राम प्रधान सदस्य रहेंगे। इसका मुख्य उद्देश्य गंगा आरती के कार्यक्रम का सफल संचालन होगा। गणेश महोत्सव के दौरान पर्यावरण के अनुकूल मूर्तियां तैयार कराने तथा विसर्जन के लिए तालाब व कुण्ड चिन्हित करने के संबंध में नगर निगम एवं पंचायती राज विभाग को जिम्मेदारी सौंपी गयी। इसी तरह गंगा प्रहरी एवं बाल प्रहरी को चिन्हित करने के लिए जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देश दिए गये। जिलाधिकारी ने पर्यावरण समिति के अन्तर्गत मेला गुघाल में पर्यावरण सुरक्षा संबंधी बिन्दुओं के अनुश्रवण के लिए नगर निगम को समिति बनाने के निर्देश दिए गये। उन्होने पर्यावरण सुरक्षा के लिए अस्थाई शौचालय, प्लास्टिक का उपयोग न करने, तथा मेला का प्लास्टिक फ्री करने के निर्देश दिये गये। उन्होने कहा कि प्रदूषण फैलाने वालों के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। उन्होने निर्देश दिये कि सिंगल यूज प्लास्टिक को पूर्ण रूप से प्रतिबंध करने करने के लिए जुमार्ने की कार्यवाही को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जाए। इस संबंध में अपर जिलाधिकारी को निर्देश दिए कि व्यापार मण्डल के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करना सुनिश्चित करें। ध्वनि प्रदूषण को कम करने हेतु साईलेंस जोन एवं साईन बोर्ड लगाने के लिए एनएएचआई, नगर निगम एवं पीडब्ल्यूडी को निर्देश दिए। निजी अस्पतालों में बायोमेडिकल वेस्ट के निस्तारण के लिए क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को मोटिवेशन के लिए कार्यशाला आयोजित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने हिण्डन नदी के किनारे किये गये वृक्षारोपण के बेहतर प्रयास की सराहना की। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी श्री विजय कुमार, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व श्री रजनीश कुमार मिश्र, डीएफओ श्री गौतम राय, क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड श्री डी0सी0पाण्डेय, जिला पंचायत राज अधिकारी श्री आलोक कुमार शर्मा सहित उद्योगबंधु श्री अनुपम गुप्ता तथा संबंधित विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दस लक्षण धर्म के चौथे दिन उत्तम सत्य धर्म की हुई पूजा

संवाददाता

नकुड़। जैन मंदिर में पर्वत राज पर्युषण पर्व की धूम के साथ चौथे दिन उत्तम सत्य धर्म की पूजा-अर्चना करते हुए पारसनाथ भगवान एवं पुष्पदंत भगवान को 108 अर्घ समर्पित किए गए। स्वाध्याय मंडल से नीलम जैन ने उत्तम सत्य धर्म की महिमा का वर्णन करते हुए बताया कि झूठ का त्याग करते हुए जो जैसा है उसको वैसा कहना उत्तम सत्य धर्म है। उन्होंने बताया कि सत्य मार्ग पर चलने वाला भवसागर से पार हो जाता है। जैन मिलन के महामंत्री पंकज जैन, विवेक जैन, राजेश जैन राजू ने बताया कि विगत रात्रि जैन समाज के अध्यक्ष एडवोकेट संदीप जैन की ओर से आयोजित धार्मिक अंताक्षरी प्रतियोगिता में प्रतियोगियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और पुरुस्कार प्राप्त किए। इसी कड़ी में आज रात्रि महिला जैन मिलन द्वारा धार्मिक तंबोला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

जबकि जैन मिलन द्वारा निकाले गए लकी ड्रा में अंजलि जैन, सिद्धार्थ जैन, मनीषा जैन लक्की रहे। धार्मिक अंताक्षरी प्रतियोगिता में राजीव जैन,पंकज जैन,वर्धन जैन,संजय जैन,विवेक जैन,राजेश जैन राजू,अवनीश जैन,सुनील जैन,शिवम जैन,मुकेश जैन, नीलम जैन, निशा जैन, सारिका जैन,बीना जैन,नियति जैन,सरिता जैन,अंजलि जैन,मंजू जैन,राखी जैन,शिवांगी जैन,आस्था जैन आदि ने पुरुस्कार जीते।

स्वच्छता जागरुकता को निकाली रैली

संवाददाता

चिलकाना। चिलकाना नगर पंचायत की ओर से स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के अंतर्गत जागरुकता रैली निकाली गई। रैली में डीटीएस पब्लिक स्कूल के बच्चों ने भी सहभागिता निभाई। शुक्रवार की सुबह को नगर पंचायत द्वारा चलाये गए अभियान के अंतर्गत नगर के विभिन्न मौहल्लो में साफ सफाई करवाई गई। रैली के माध्यम से स्कूली बच्चों ने नगर वासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया। रैली का शुभारंभ करते हुए चेयरपर्सन फूल बानो अंसारी ने कहा कि स्वच्छता पखावाड़ा के अंतर्गत नगर में अलग अलग जगहो पर सफाई अभियान चलाकर नगरवासियों को स्वच्छता केप्रति जागरूक किया जायेगा । इस दौरान ईओ एजाज अहमद, हाजी इसरार, भाजपा नेता जायर हुसैन, पंचायतकर्मी नफीस, राजिक, प्रताप सैनी एवं प्रधानाचार्य मुन्तजीर अहमद, सोनू अंसारी आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त डायरी

शिक्षक समाज का आईना है: बीएसए राम जियावन मौर्य

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान कुशीनगर के प्रांगण में मिशन शिक्षण संवाद के तत्वावधान में आयोजित उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान समारोह में जनपद के उत्कृष्ट शिक्षकों को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डाक्टर राम जियावन मौर्य के द्वारा अंग वस्त्र और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया हाटा बिकास खण्ड के न्यायपंचायत अहिरौली राय से बिपिन कुमार सिंह और परेवाटार न्याय पंचायत से शिक्षक देवानंद दूबे व हरेंद्र चौरसिया, महेश कर्णधार, चन्द्रहास लक्ष्मी, श्री नूतन शुक्ल, तारिक अहमद, संतोष ,शिल्पी मिश्रा, कृष्ण गोपाल आदि को उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कुशीनगर के द्वारा अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डाक्टर राम जियावन मौर्य ने शिक्षकों सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षक समाज का आईना है शिक्षक सही दिशा दिखाता है और शिक्षकों के उपर बच्चों का भविष्य टिका रहता है कार्यक्रम की अध्यक्षता मंजू सिंह संचालन सुनील सिंह व सूर्य प्रकाश ने किया इस अवसर पर खण्ड शिक्षा अधिकारी उदयशंकर राय, रीता गुप्ता, सुरेन्द्र बहादुर , जयप्रकाश, जिला समन्वयक सतेन्द्र मौर्य, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के मंडल अध्यक्ष राजेश शुक्ल, जिलाध्यक्ष अविनाश शुक्ल, धर्मेंद्र पांडेय, महेश कर्डधार उपस्थित रहे।

हत्या का प्रयास करने वाले 05 वांछित अभियुक्तगण गिरफ्तार

संवाददाता

सहारनपुर। थाना मंडी पुलिस द्वारा हत्या का प्रयास करने वाले 05 वांछित अभियुक्तगण को गिरफ्तार किया गया। 20 सितम्बर को जे0वी0 जैन इण्टर कालेज थाना मण्डी सहारनपुर में छात्रों के बीच हुए झगडे में अभियुक्त समीर द्वारा फोन करके अपने कालेज से बाहर के दोस्तो को बुलाकर लक्की नाम के छात्र पर चाकू से हमला करके गम्भीर रूप से घायल कर देने के सम्बन्ध में थाना मण्डी पर सूचना प्राप्त होने पर त्वरित कार्यवाही करते हुए मजरूब का प्राथमिक उपचार कराया गया तथा तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज किया गया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ विपिन ताडा के निर्देशन मे वांछित अपराधियो की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक नगर व क्षेत्राधिकारी नगर प्रथम के निकट पर्यवेक्षण में तथा प्रभारी निरीक्षक मण्डी धर्मेन्द्र सिंह के कुशल नेतृत्व में टीम गठित कर घटना में शामिल 05 अभियुक्तगण समीर पुत्र अब्दुल मालिक,जुनैद पुत्र जही, यूसुफ पुत्र मुन्फैत, शाकिब पुत्र अकबर, दानिश पुत्र यासीन को बेहट अड्डे के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तगणो के विरूद्ध अन्य आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है। मुख्य अभियुक्त समीर उपरोक्त ने पूछताछ पर बताया कि मेरी लक्की से स्कूल में कहासुनी हो गयी थी। मैने अपने स्कूल के लड़के उमर के मोबाईल से अपने दोस्त जुनैद के मोबाईल पर फोन करके अपने दोस्तो जुनैद, यूसुफ, शाकिब व दानिश को स्कूल जे0वी0 जैन इण्टर कालेज में बुलाया था। मैं व मेरे चारो दोस्त लक्की से बातचीत करने आये थे, तो वहीं स्कूल में हमारी गाली गलौच व मारपीट हो गयी थी।

सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट से हाजी इकबाल के परिवार को बड़ी राहत

संवाददाता

सहारनपुर । जनपद में खनन के बड़े कारोबारी पूर्व एमएलसी हाजी मोहम्मद इकबाल के परिवार को सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट से राहत मिलने के बाद अब ईडी कोर्ट से भी राहत मिलने की खबर सामने आ रही है । हाजी इकबाल के अधिवक्ता ने ईडी कोर्ट में याचिका दाखिल कर पक्ष रखने के लिए समय मांगा हैझजिसे कोर्ट ने स्वीकार करते हुए समय दिया है और कहा की उनकी जमानत याचिका पर फैसला होने तक कोई भी दंडात्मक कदम नहीं उठाया जाएगाझऔर तब तक जब्त प्रॉपर्टी मुकदमों में कोई निर्णय नहीं लिया जाये साथ ही किसी भी तरह का कोई उत्पीड़न नहीं किया जाएगाझवही हाजी इकबाल के परिवार की एक और अपनी संपत्ति को खुर्दबुर्द करने के गंभीर आरोप लगाये गये हैझजेल में बंद हाजी इकबाल के पुत्र वाजिद ने अपने अधिवक्ता धनंजय शुक्ला माध्यम से सीएम पोर्टल पर शिकायत के साथ ही शासन और प्रशासन के दर्जन भर आला अफसरों को शिकायत भेजी गई हैझआरोप लगाया कि पुलिस और कुछ लोगो के साथ मिल कर उनकी गौशाला से 50 गाये बेच दी और उनके बागो में खड़े लाखों रूपयो के कीमती पेड़ों को भी काट कर बेच दिया गया हैझसीएम पोर्टल पर की गई शिकायत के बाद शासन ने जांच के आदेश दिए है।

श्री जाहरवीर गोगा म्हाड़ी मेला छड़ियों की भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ प्रारम्भ

संवाददाता

नकुड़। नगर में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री जाहरवीर गोगा म्हाड़ी मेला शुरू हुआ। मेले से पूर्व नगर में छड़ियो के निशान की भव्य शोभायात्रा श्री जाहरवीर चौक से प्रारम्भ होकर नगर के पुराना बस स्टैंड से जनक बाजार को होते हुए श्री प्राचीन नकुलेश्वर महादेव मंदिर से होते हुए श्री जाहरवीर गोगा जी म्हाड़ी पर सम्पन्न हुई। छड़ियो के म्हाड़ी पर पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया व पूजा अर्चना कर छड़ियो को उनके स्थान पर विराजमान कर पूजा अर्चना शुरू की गयी।छड़ियो के मेला प्रांगण में पहुंचने पर प्रसाद चढ़ाने वाले श्रद्धालुओं की लम्बी लम्बी लाइन प्रारम्भ हो गयी।